CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PM 4

|| the gurukul ||

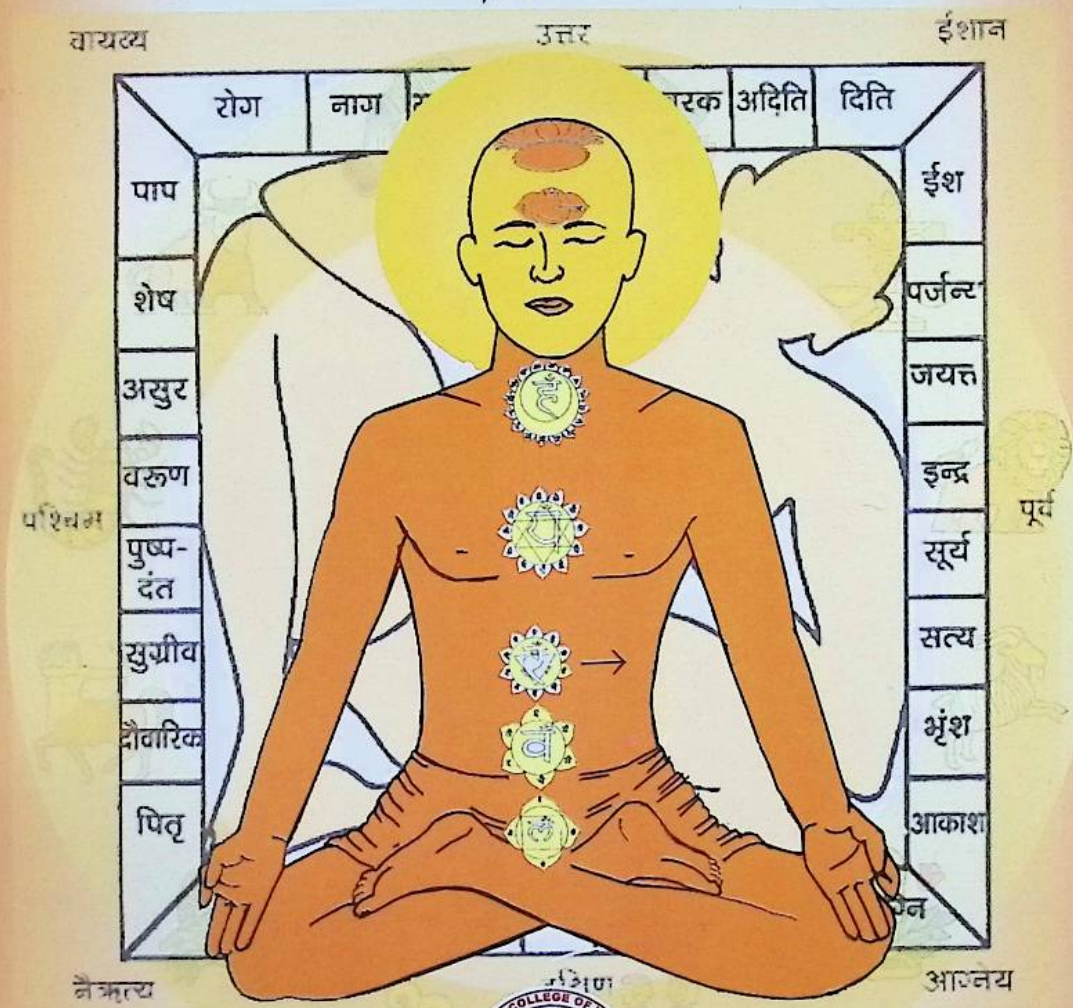

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry Module - 4

अनुक्रमणिका

अध्याय 1	:	हाथ में रेखाएँ	3–16
अध्याय 2	:	मस्तिष्क रेखा	17–28
अध्याय 3	:	हृदय रेखा	29–42
अध्याय 4	:	सूर्य रेखा	43–50
अध्याय 5	:	भाग्य रेखा	51–57
अध्याय 6	:	स्वास्थ्य रेखा	58–63
अध्याय 7	:	शुक्र मुद्रिका	64–65
अध्याय 8	:	गौण रेखाएँ	66–83
अध्याय 9	:	अन्य रेखाएँ	84–101

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ में रेखाएँ

प्रस्तावना

इस सृष्टि में मानव एवं मानव जीवन अपने आप में एक अद्भूत रचना है जिसे ईश्वर द्वारा कुछ कार्यो एवं कर्मो के लिये उत्पन्न किया गया है। इन गुढ़ रहस्यों को समझना एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया द्वारा निष्पादित है। मानव के हाथों में स्थित रेखाओं का एक विशिष्ट संयोजन योजनाबद्ध नियमों द्वारा गुढ़ रहस्यों को प्रकट करता है। इन संयोजन शैली की महत्ता ही हस्त शास्त्र बनकर उभरी है क्योंकि हाथ मे स्थित रेखाएं अनायास ही उत्पन्न नही होती है। इन्हीं छोटी एवं बड़ी रेखाओं की रचना मानव द्वारा निष्पादित कार्यो एवं प्रारब्ध के कर्मो द्वारा एक सांकेतिक भाषा में प्रकट हो उसके वर्तमान एवं भविष्य का निर्धारण करती है। अब यह एक सरल ज्ञान है जिसे कोई भी जन सामान्य मानव आसानी से समझ सकता है और एक अच्छा भविष्य वक्ता बन सकता है।

कितनी आश्चर्य जनक बात है कि जब मानव अपनी माँ के गर्भ में चार माह का होता है तभी उसकी मुट्ठी में रेखाओं की उत्पत्ति हो जाती है जो थोड़े बहुत फेर बदल के बाद मूल रूप मे अस्तित्व मे आती है। वैज्ञानिक विश्लेषणों द्वारा ज्ञात हुआ है कि अधिक बौद्धिक क्षमता वाले मानव में हाथों की रेखाएं अधिक विकसित रहती है परंतु कम बौद्धिक क्षमता वाले जातक की हाथ की रेखाएं कम विकसित होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुख्य रेखाएं

वास्तव में रेखाओं की उत्पत्ति का कारण मानव की शारीरिक बनावट और मानसिक विकास दोनों ही है। इसी कारण मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले मानसिक विचारों के मूल घटक हाथों में रेखाओं की बनावट को प्रभावित करते है तथा रेखाओं को बनाते और मिटात रहते है। मानव के हाथ में सात प्रधान रेखाएं होती है।

1. जीवन रेखा
2. मस्तिष्क रेखा
3. ह्रदय रेखा
4. सूर्य रेखा
5. भाग्य रेखा
6. स्वास्थ्य रेखा
7. शुक्र मुद्रिक

इन सात रेखाओं के अलावा गौण रेखाएं भी होती हैं।

1. मंगल रेखा
2. वासना रेखा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. अतीन्द्रिय रेखा

4. विवाह रेखा

5. शनि मुद्रिका

6. गुरू मुद्रिका

7. यात्रा रेखाएं

8. तीन मणिबंध रेखाएं

9. पुत्र–पुत्री रेखाएं

10.मित्र रेखाएं

11.शत्रु रेखाएं

वास्तव में सात प्रधान रेखाएं और मुख्य गौण रेखाएं हाथों में स्पष्ट पहचानी जा सकती है। इनका निर्धारण व सीमाएं निश्चित है।

प्रायः ये एक दूसरे से अलग रहती है। इनमें सात प्रधान रेखाएं सभी मानवों में कुछ विशिष्टताएं लेकर मौजूद रहती है किन्तु गौण रेखाएं सभी हाथों में नही पाई जाती है तथा सभी हाथों में अनिवार्य भी नहीं है, अतः इनको पहचानना थोड़ा जटिल कार्य है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

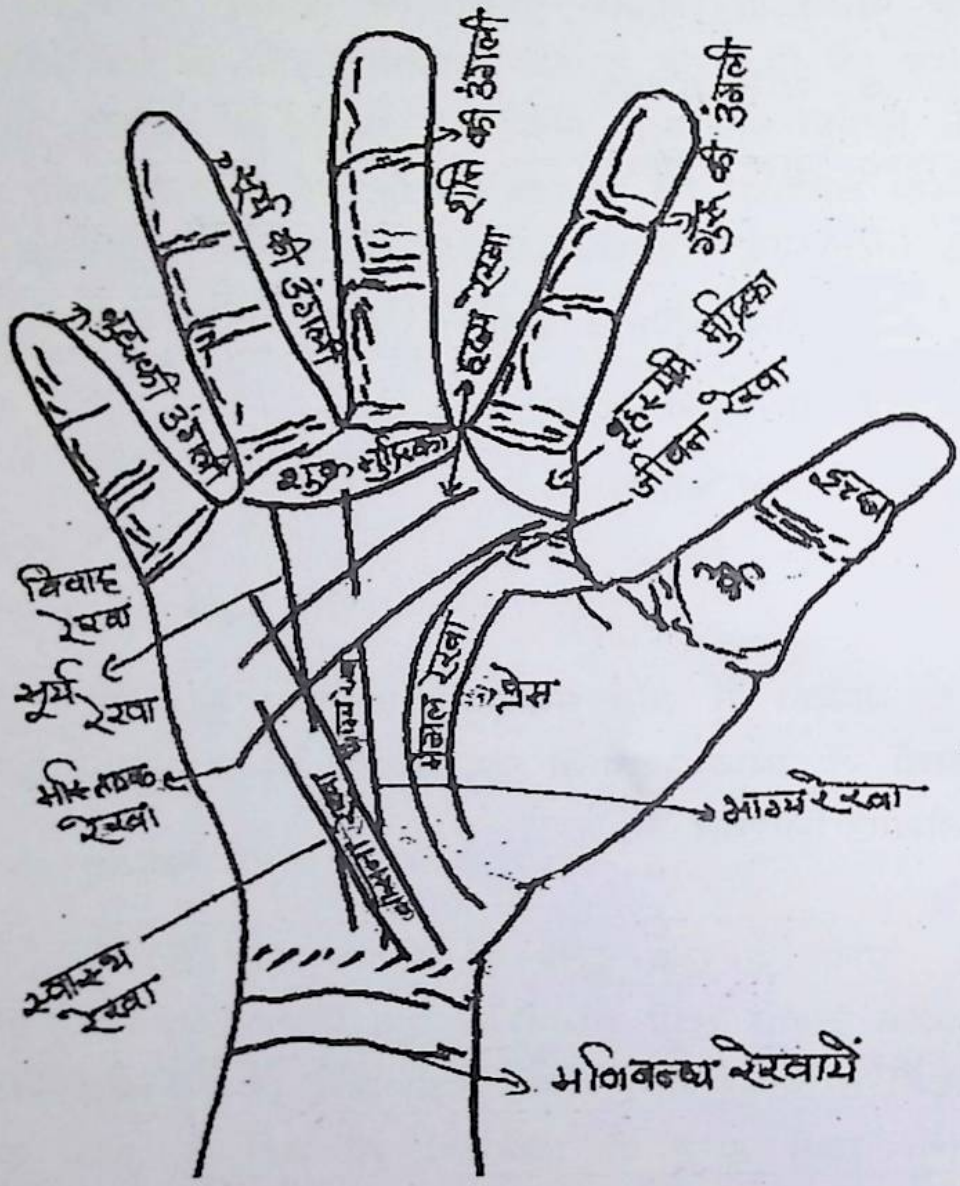

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रभावी रेखाएं

इन रेखाओं के बावजूद कुछ रेखाएं ऐसी है जिनकी उत्पत्ति अनिश्चित व अनियमित है। इन रेखाओं को प्रभाव रेखाएं कहते है। इन्हें कोई नाम नहीं दिया जा सकता है। ये पर्वत क्षेत्रों या हथेली के किसी भी भाग में प्रकट हो अन्य रेखाओं के साथ विलीन हो जाती है तथा कई विशिष्ट आकृतियाँ बनाती है, इन्हें जाल, क्रास, त्रिकोण के रूप में या चिन्ह के रूप मे पहचाना जाता है। इनका फलित इनके उत्पत्ति स्थल वाली रेखाओं या पर्वत क्षैत्र से ही संबंधित रहता है।

रेखाओं की बनावट व स्तर

हाथ में रेखाएं स्पष्ट अंकित होनी चाहिये इन्हें ज्यादा चौड़ी या मध्यम रंग (पीली) नहीं होनी चाहिये। पतली और गहरी रेखाएं उत्तम है। छिछली रेखाएं दोषपूर्ण होती है। छिछली रेखा की उत्पत्ति जीवन प्रवाह के समान रूप में गतिशील नही होने को प्रदर्शित करता है। उनमें टूट-फूट, द्वीप, चिन्ह या अन्य प्रकार की अनियमितताएं होना अशुभ है। अगर रेखाएं निस्तेज हो तो जातक का स्वास्थ्य खराब होगा एवं जातक में निर्णय लेने की क्षमता व शारीरिक स्फूर्ति का अभाव रहेगा। लाल वर्ण की रेखाएँ उत्साही, स्थिर स्वभाव व मानसिक सक्रियता को प्रकट करती है। गहरा या काले रंग वाली रेखा दृढ़ धर्मिता व उदासीन प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेखाओं पर चिन्ह

मुख्य रेखाओं पर चिन्ह जैसे क्रास, वर्ग, त्रिशुल आदि उस रेखा के महत्व को कम या ज्यादा करते है। मुख्य रेखा को कोई प्रभाव रेखा द्वारा काटें जाने पर बाधा उत्पन्न होती हैं। रेखा पर द्वीप का चिन्ह उस रेखा के प्रभाव को नष्ट करता है। इसके विपरित अशुभ चिन्ह के साथ वर्ग का होना उस अशुभ चिन्ह की अशुभता को नष्ट कर शुभ फल देता है। दो शाखा युक्त रेखा उस रेखा की शक्ति को बढ़ा देता है। इसके अलावा जो रेखा किसी पर्वत विशेष पर पहुँचे तो उस रेखा पर पर उस पर्वत क्षेत्र का प्रभाव कार्य करेगा। अतः रेखाओं की उत्पत्ति व निर्धारण में इन समस्त धारकों का अध्ययन करने के उपरांत ही सही व्याख्या हो सकती है।

प्रत्येक रेखा के बारे में संक्षिप्त जानकारी निम्न है। इसके बारे में विशेष जानकारी अध्ययन सामग्री पांच से दी जायेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. जीवन रेखा

हथेली में गुरू पर्वत के नीचे से शुक्र को घेरती हुई अर्द्ध चंद्राकार गोलाई लिये हुये मणिबंध तक पहुंचने वाली रेखा को जीवन या आयु रेखा के रूप में पहचाना जाता है। ग्रंथों में इसे पितृ–रेखा बताया गया है। इस रेखा से जातक के स्वास्थ्य तथा शक्ति का पता चलता है।

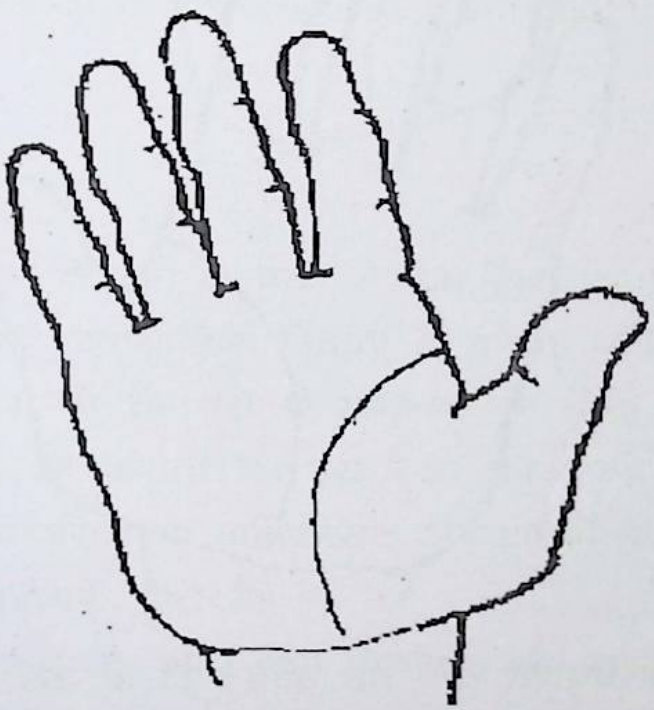

मनुष्य की प्राण शक्ति किस अवस्था में है, अपने स्वास्थ के साथ कब सर्वोच्च स्थिति मे होगी, वह जीवन में सफलता प्राप्त करेगा अथवा नहीं, इत्यादि फल कथन इस रेखा द्वारा किया जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि यह रेखा स्पष्ट, सुंदर व अच्छी गोलाई वाली हो तो ऐसा जातक उत्तम स्वास्थ्य वाला, लंबी उम्र प्राप्त कर, वैभव व सुखी जीवन व्यतीत करता हुआ जीवन व्यापन करेगा।

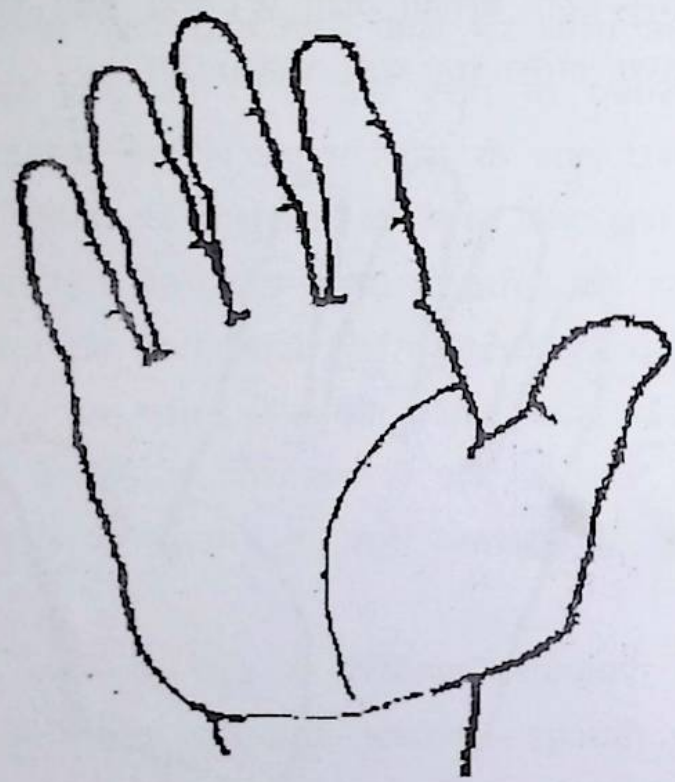

इसके विपरित यदि यह खंड़ित हो तो उसे जीवन व्यापन में संर्घष कर कठिनाई पूर्वक जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। ऐसा जातक जीवन भर दुखी रहेगा। दुर्बल रेखा का होना उसकी प्राण शक्ति का अभाव बताती है। इस रेखा के साथ सहायक रेखा का होना उसके गुणों को बढ़ाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

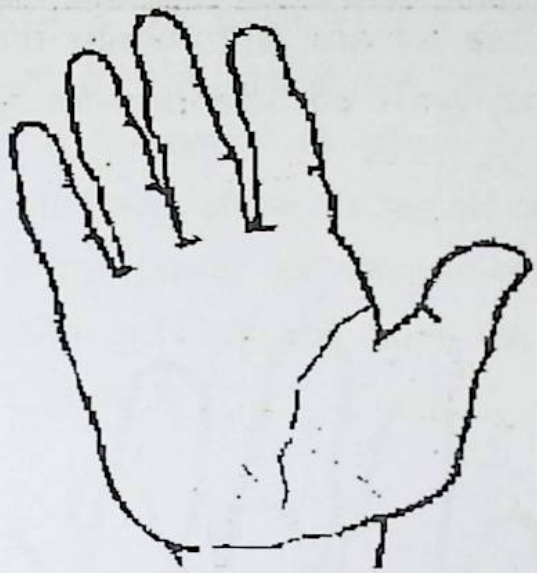

सामान्यतः करतल के बाजू से इस रेखा का प्रारंभ होता है। यह इसकी स्वाभाविक स्थिति है परन्तु यदि यह गुरू पर्वत से प्रारंभ हो तो यश व सम्मान के साथ जातक को धन की वृद्धि भी कराती है। इस रेखा का अन्य पर्वत क्षेत्र की स्थिति, विकसित या अविकसित अवस्था में प्रभाव ज्यादा या कम फलदायक होते है।

जीवन रेखा से आयु का निर्धारण भी संभव है परंतु अन्तिम निर्णय इससे नही प्राप्त किया जा सकता क्योंकि जीवन रेखा मुख्य रूप से प्राण शक्ति को प्रकट करती है। हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा, स्वास्थ्य रेखा तथा अन्य रेखा व रेखा चिन्हों के विश्लेषण से जातक की बिमारी या अकाल मृत्यु के बारे में जाना जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा पर अंत में (मणिबंध वाले सिरे पर) आडी रेखाएं बिंदु या गुणन का चिन्ह अचानक मृत्यु या दुर्घटना का द्योतक है।

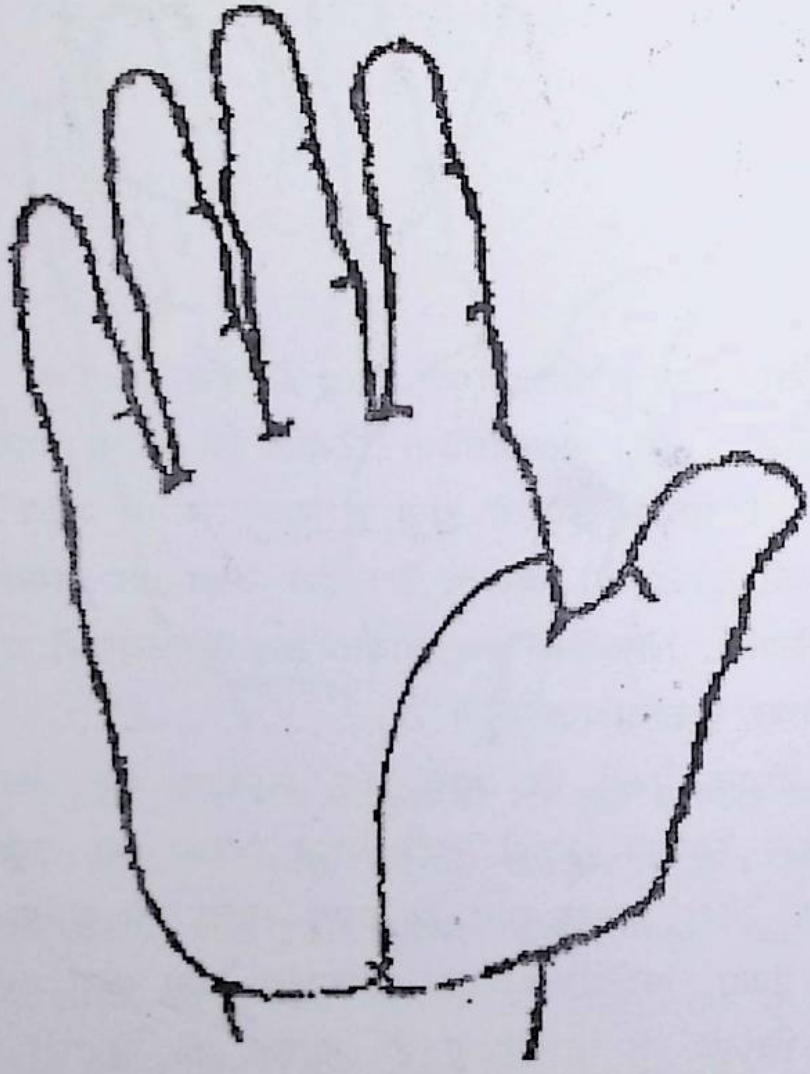

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रायः देखा गया है कि प्रारंभ में इस रेखा की स्थिति सुदृढ़ एवं सुंदर होती है परंतु बाद में यह क्षीण हो जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि जातक के जीवन के पूर्व भाग में प्राण शक्ति संचित थी किन्तु जीवन के उत्तरार्ध में प्राण शक्ति में कमी आयेगी अर्थात जातक का स्वास्थ्य कमजोर होगा।

जीवन रेखा और बुध रेखा के स्पर्श को स्वास्थ्य के लिये घातक माना जाता है।

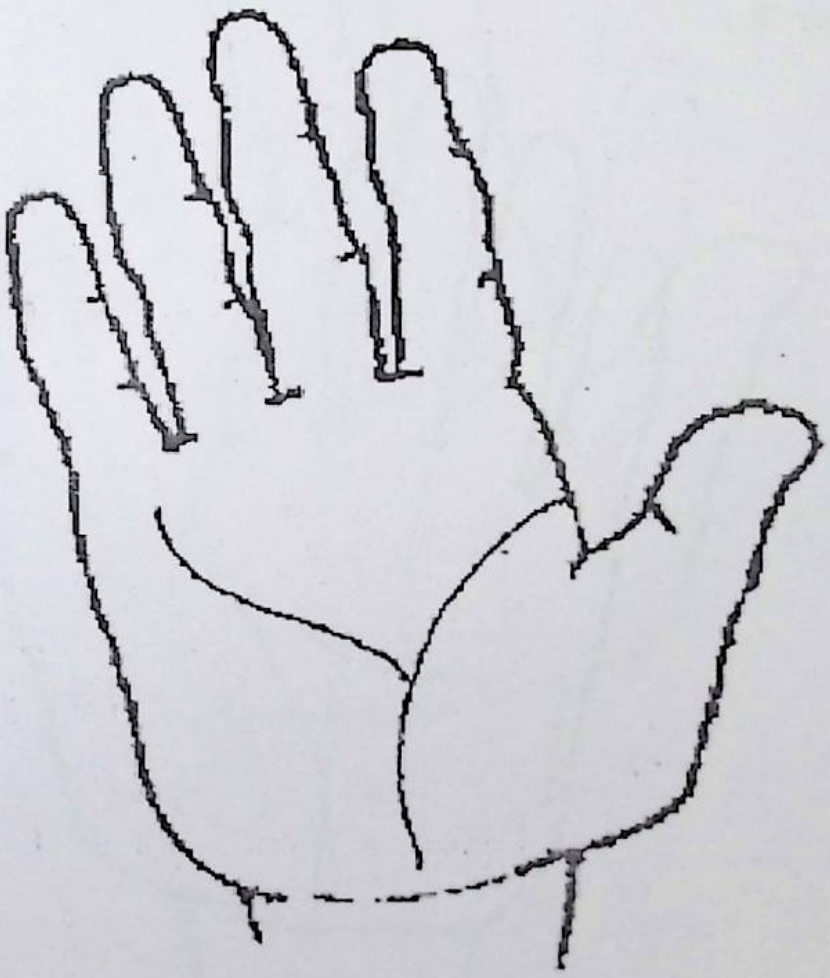

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा को कोई प्रभाव रेखा या अन्य रेखा अलग-अलग स्थिति व क्षेत्र विशेष पर काटे तो उसका प्रभाव उस क्षेत्र व काटने वाली रेखा पर निर्भर करेगा तथा बाधांए उत्पन्न करेगा।

इसी प्रकार यदि मस्तिष्क रेखा आयु रेखा से मिलकर निकले तो यह युक्ति संगठता और बुद्धिमानी की ओर इंगित करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित एक दूसरे से अलग होकर निकलने पर कार्य व्यवहार में स्वतंत्रता का पर्याय है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा तीनों का मिलना अत्यंत दुर्भाग्य का सूचक है। इन रेखाओं की स्थिति से जातक सदैव आवेश व क्रोध में रहता है तथा कार्य बिना सोचे समझकर करने से संकट में फंस जाता है।

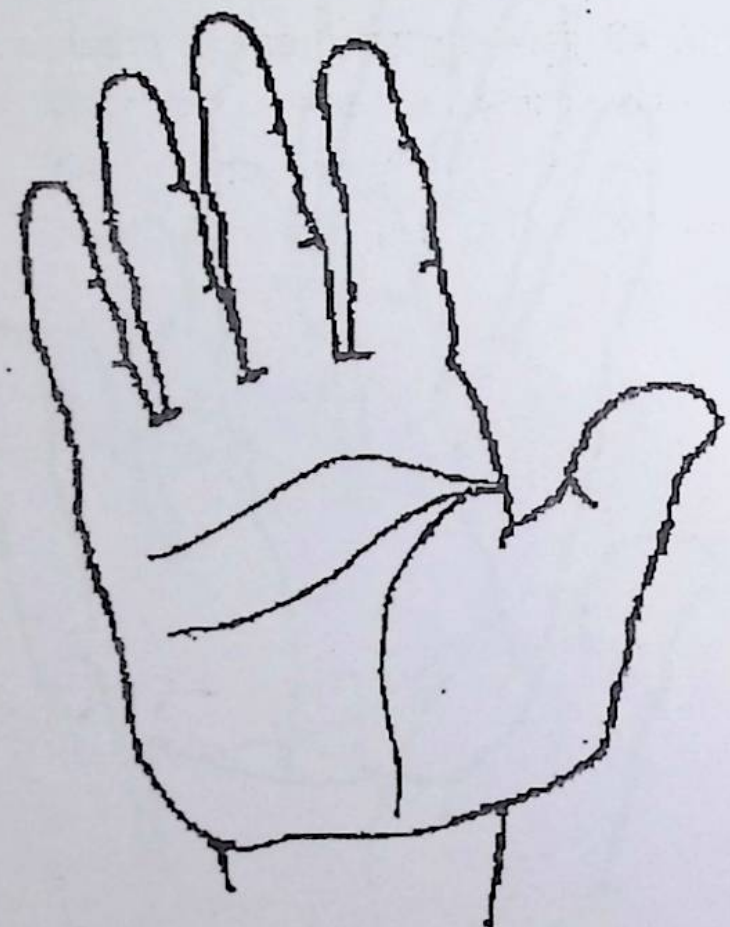

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. मस्तिष्क रेखा

गुरू क्षेत्र के नीचे से जीवन रेखा के प्रारंभ के ऊपरी भाग से शुरू होकर आक्रामक मंगल के ऊपर से होती हुई रक्षात्मक मंगल के ऊपरी सिरे तक पहुंचने वाली रेखा शीर्ष रेखा या मस्तिष्क रेखा कहलाती है। कभी–कभी यह मंगल क्षेत्र के ऊपरी सिरे से प्रारंभ होती है। इस रेखा को धन रेखा भी कहा गया है क्योंकि बलशाली मस्तिष्क एवं स्नायु मंड़ल के पुष्ट होने पर व्यक्ति साहसी, कार्य में लीन व उत्कृष्ट कर्म करता है तथा जीवन को सुखमय बनाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा एवं जीवन रेखा के सुयोग होने से बौद्धिक शक्ति प्राण शक्ति से मिल जाती है एवं जातक में बुद्धि के साथ सर्तकता एवं कार्य निपुर्णता की बढ़ोतरी करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा अपने स्थान की अपेक्षा नीचे स्तर पर हो तो आत्मविश्वास में कमी आ जाती है।

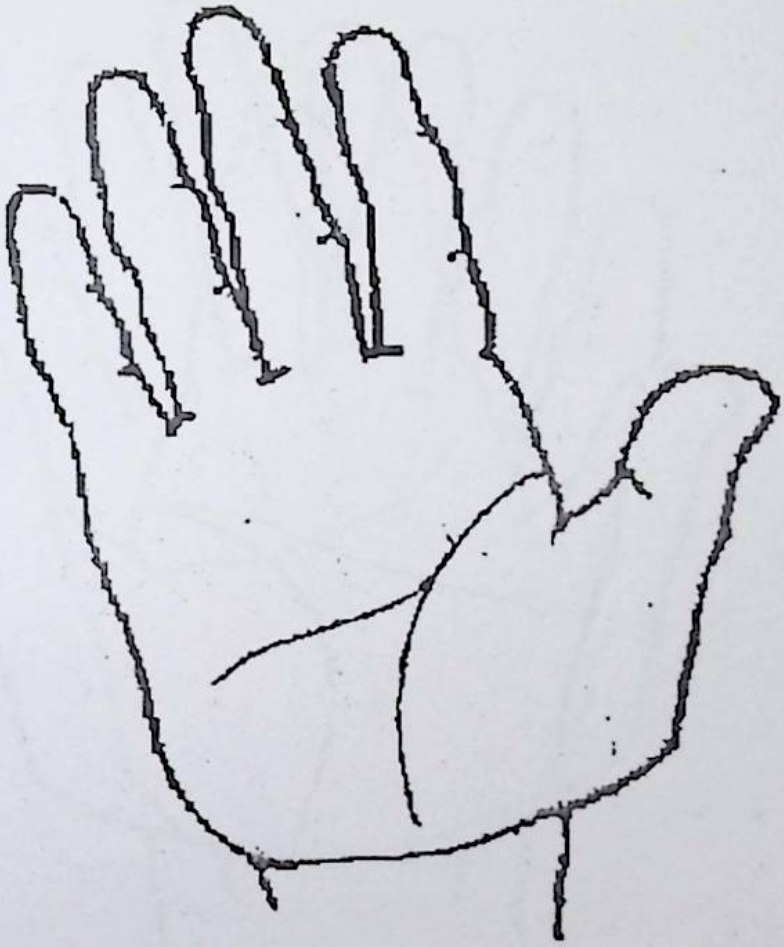

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित अपने स्वाभाविक स्थान पर होने पर व्यवहारिक बुद्धि का स्वामी तथा धन के प्रति लगाव रखता है।

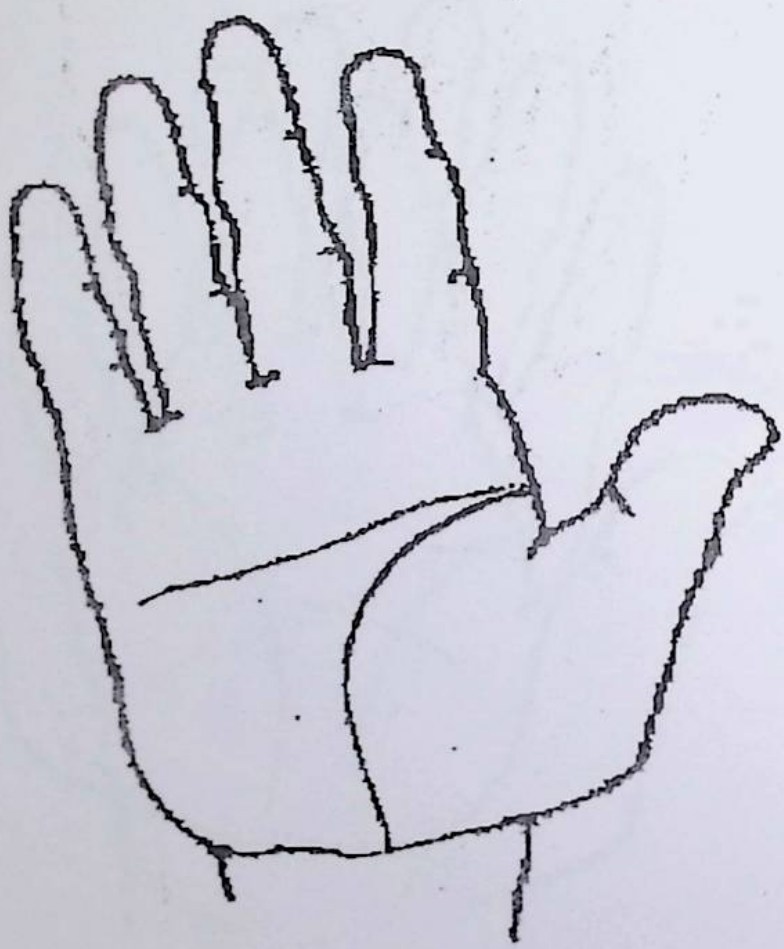

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू स्थल पर झुकी हुई, आध्यात्म में रूचि रखने वाला होता है।

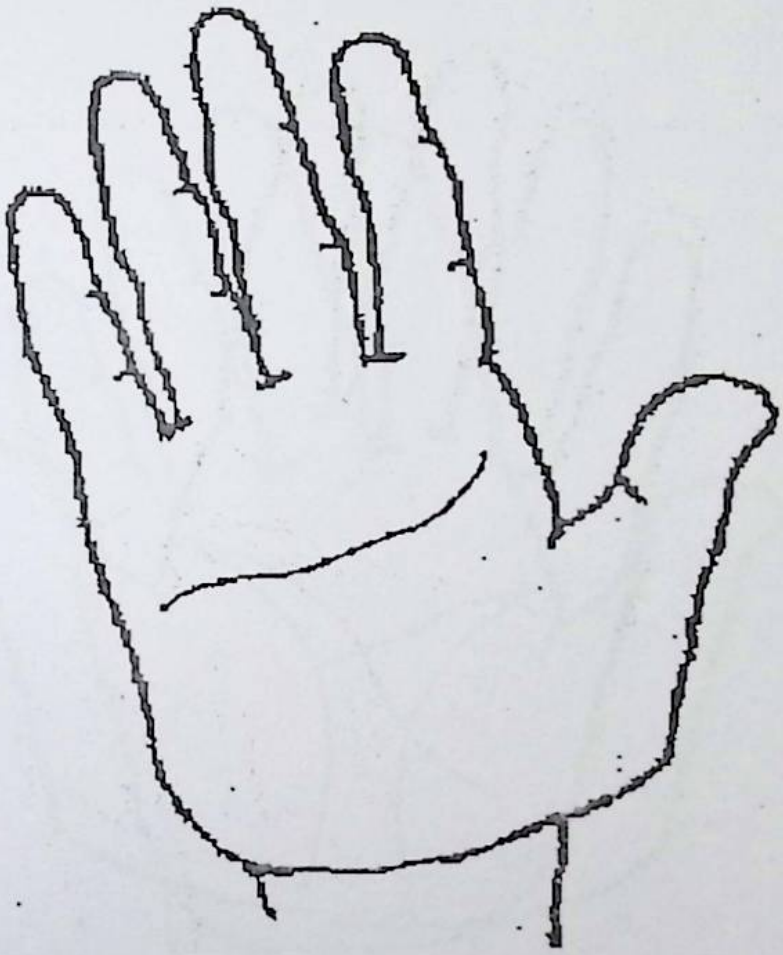

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा का अन्तिम सिरा चंद्र स्थल की ओर झुका होने पर कला प्रेमी व कल्पना लोक में विचरण करने वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा का मध्य भाग छोटी होने पर जातक सांसारिक बातों में चतुर किन्तु विद्या, दर्शन व बुद्धि में निर्बल होता है।

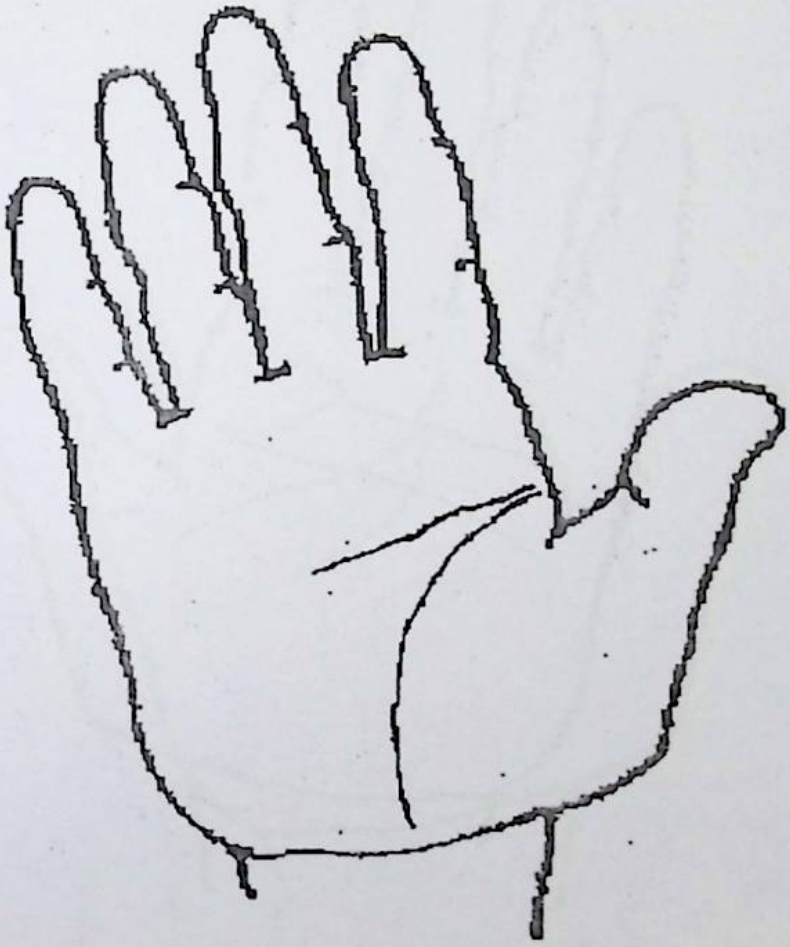

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा व हृदय रेखा सिरे पर आपस में मिले तब जातक को हृदय रोगी या मस्तिष्क रोग प्रदान करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित सिरे पर उठी हुई हो तथा हृदय रेखा से अंतर पर हो तो जातक में मानसिक बुद्धि और आत्म बल वं वृद्धि करती है। दोनों में से जो रेखा पुष्ट होगी उसका नियत्रंण अधिक होगा।

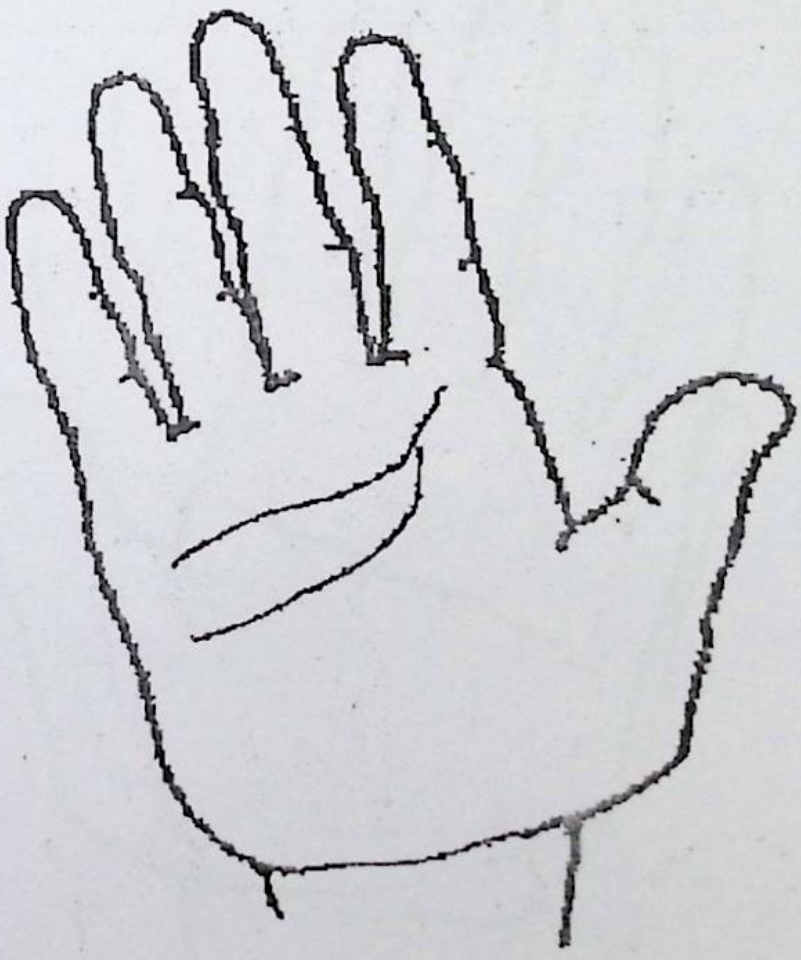

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा कमजोर कड़ीयों में या श्रृंखलाओं में होने पर अशुभ फल कारक है। कटी चौड़ी व संकरी अनियमित रेखा मानसिक रोगों का कारक बनती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा का झुकाव जिस ग्रह स्थल की तरफ अधिक होगा उस ग्रह के फल को वह बड़ा देगी। इसी प्रकार अशुभ चिन्ह, द्विप, क्रास या जाला इस रेखा पर अशुभ फल कारक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तिष्क रेखा पर चतुर्भूज का चिन्ह जातक को विपत्तियों से बचाने वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. हृदय रेखा

हृदय रेखा जातक के भाव पक्ष को प्रदर्शित करती है। प्रेम, सहानुभूति, स्नेह, ईर्ष्या तथा द्वेष जैसे धनात्मक एवं ऋणात्मक भाव एवं संवेदनाएं इसी रेखा द्वारा मालूम होते है। इसके साथ ही हृदय के स्वास्थ्य को भी यह इंगित करती है। हृदय रेखा का उद्‌गम तर्जनी के तीसरे पर्व से या गुरू क्षेत्र से हो शनि पर्वत के नीचे से होते हुये इसका समापन बुध पर्वत पर होता है।

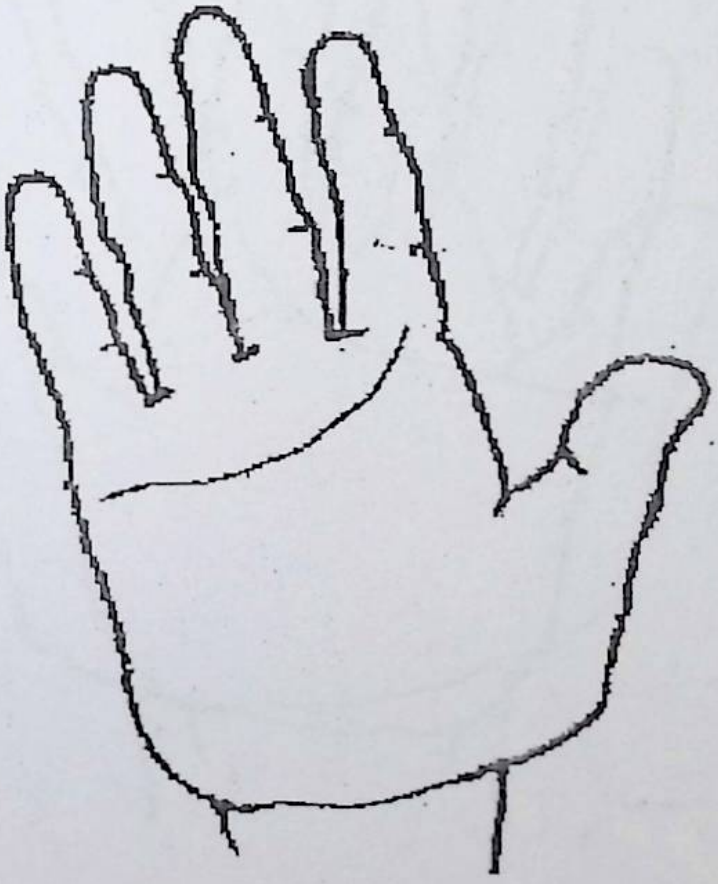

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि यह रेखा गहरी, पतली एवं पूर्ण लंबाई मे हो तो जातक संवेदनशील तथा प्रेम को पूजा मानने वाला भावुक होता है। ऐसे जातक सभी के प्रति आदर भाव से अपने कर्त्तव्य को समझने वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस जातक में तर्जनी के तीसरे सिरे उदय होने वाली हृदय रेखा संवेदनशीलता को चर्मोत्कर्ष तक पहुंचाती है। जातक उन्माद में कुछ भी कर सकता है।

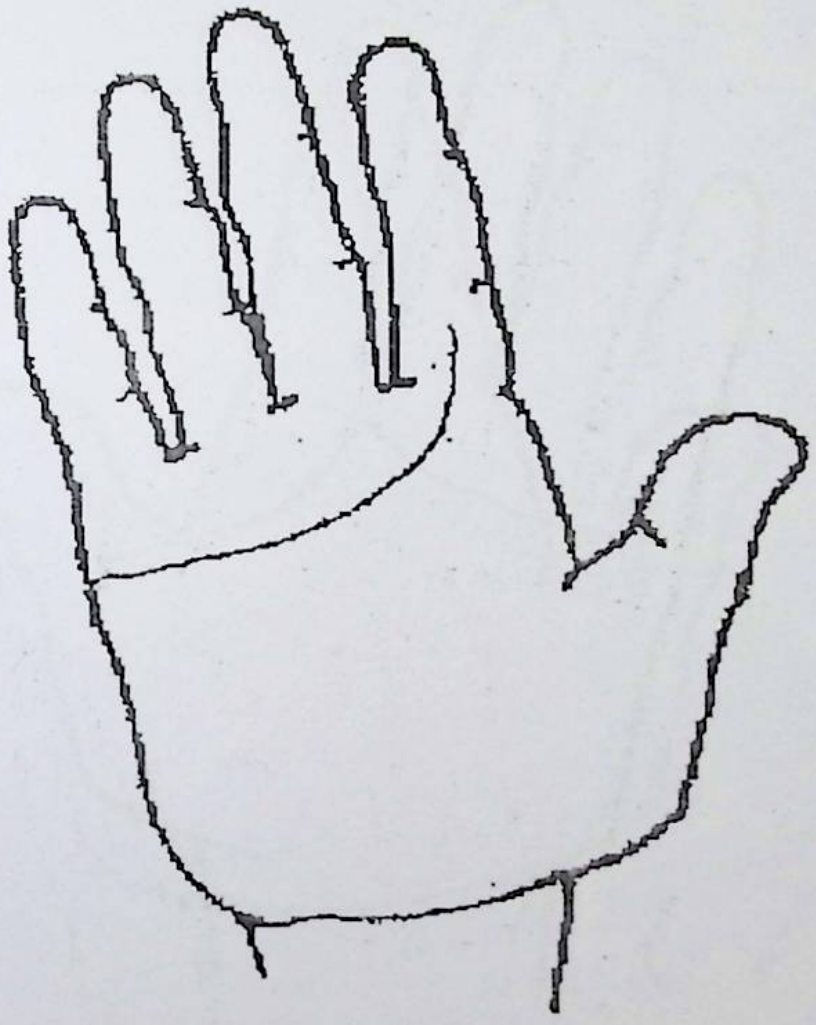

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू स्थल से प्रारंभ होने पर आध्यात्मिक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है।

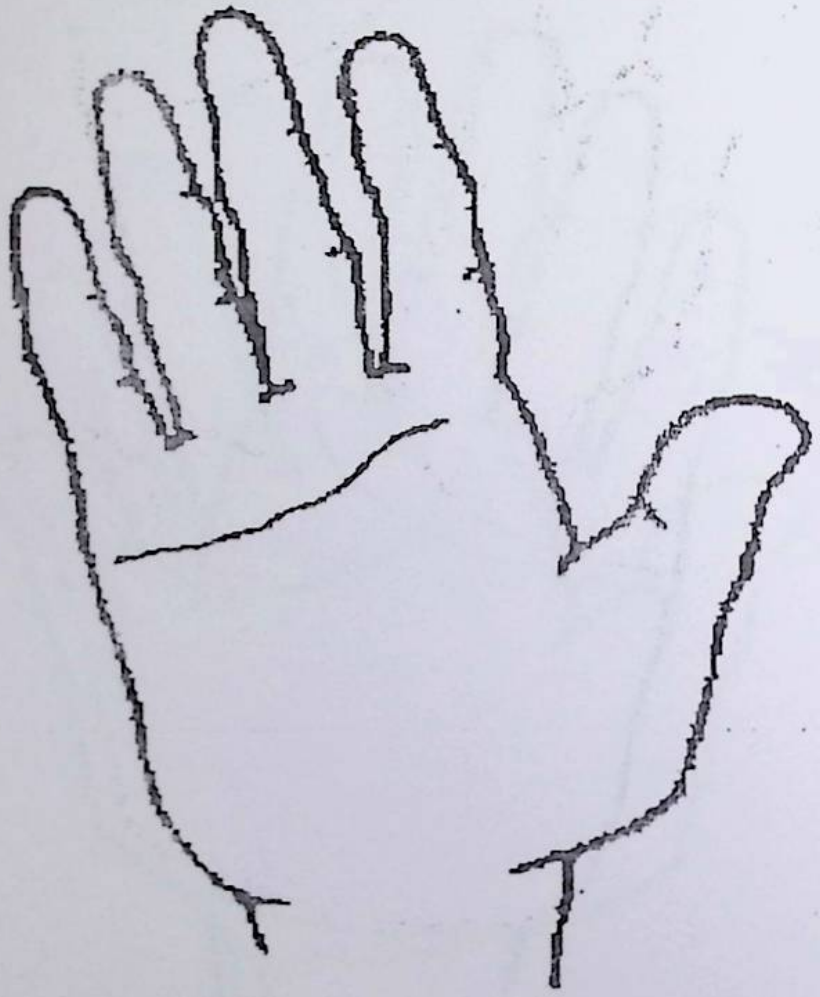

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि पर्वत के मध्य से आरंभ होने वाली रेखा जातक को व्यवहारिक बुद्धि का स्वामी बनाती है।

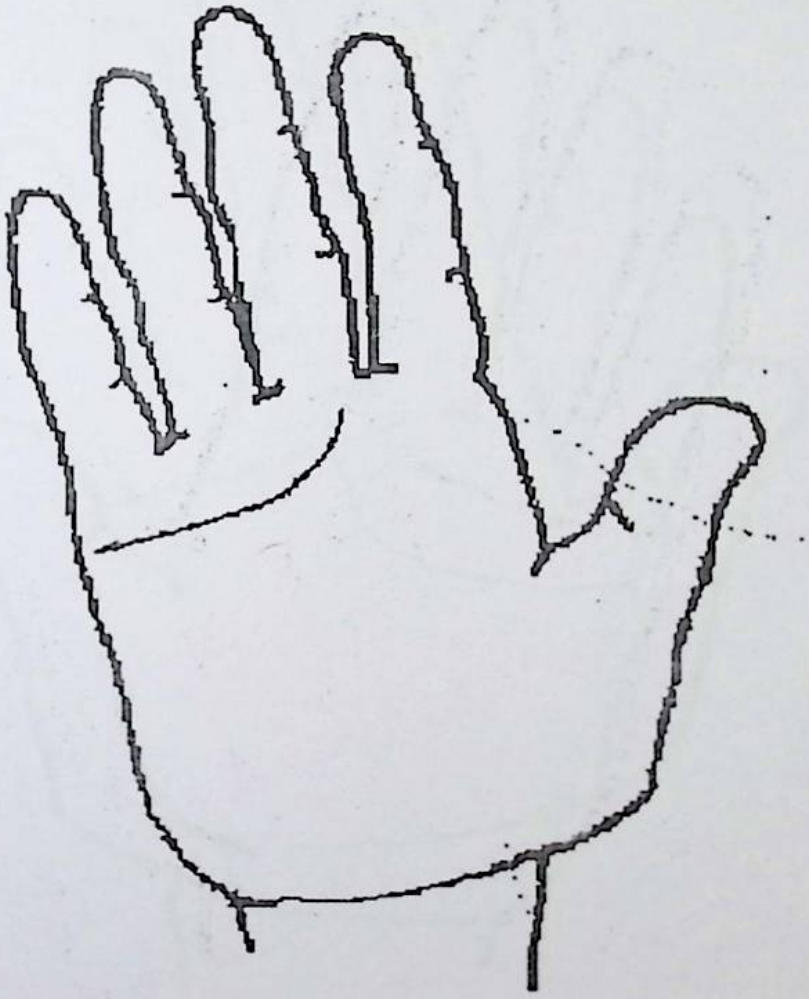

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदय रेखा अर्धचंद्राकार हो तो जातक में भावुकता की मात्रा अधिक होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित सीधी रेखा जातक में कठोरता का पर्याय है।

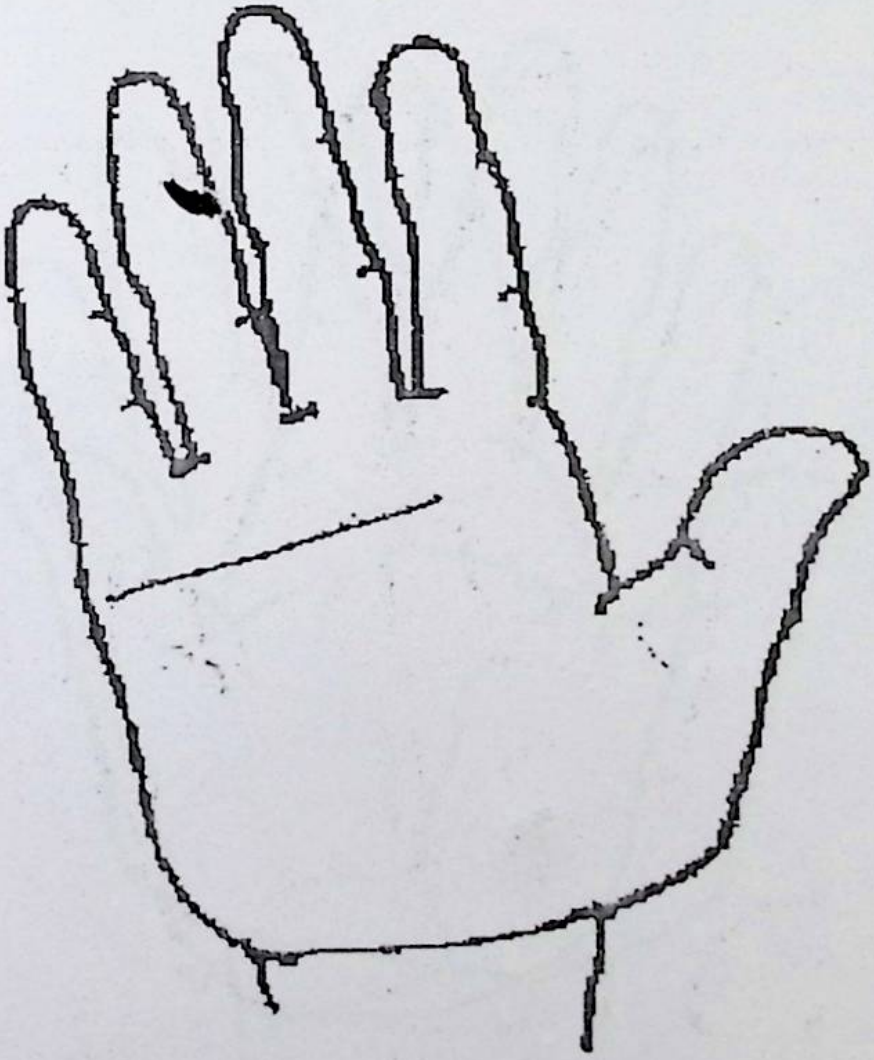

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टूटी व कटी हृदय रेखा, प्रेम संबंधों में असफलता एवं हृदय व रक्त संचार की कमजोरी को दर्शाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदय रेखा एवं जीवन रेखा दोनों ही छिछली व कटी श्रृंखलाओं में हो या द्वीप युक्त होने पर हृदय रोग से मृत्यु का कारण बनती है।

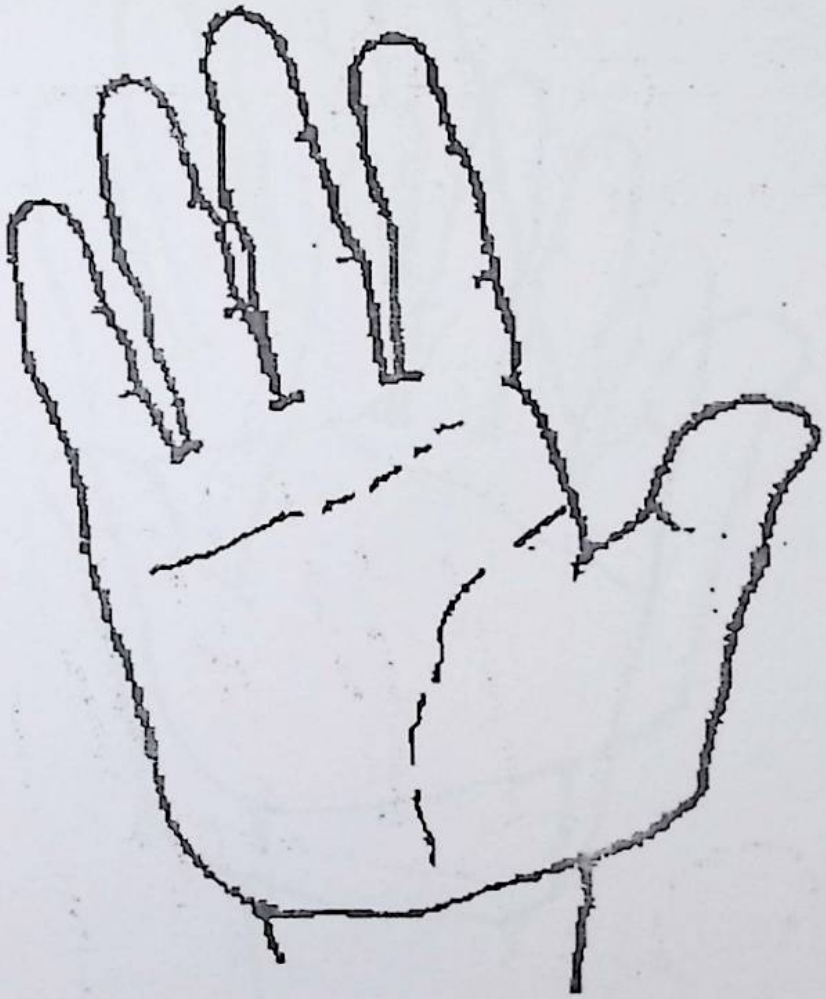

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदय रेखा अंगुलियों के आधार से जितनी निकट होगी जातक में भाग की मात्रा उतनी ज्यादा होगी। इसी प्रकार हृदय रेखा की शाखाएं जिस पर्वत क्षेत्र पर जाती है। उस पर्वत विशेष की विशेषताएं भावनाओं पर प्रभाव ड़ालती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू पर्वत पर जाये तो आदेशवादी, आध्यात्म में रूचि को दर्शाती हैं।

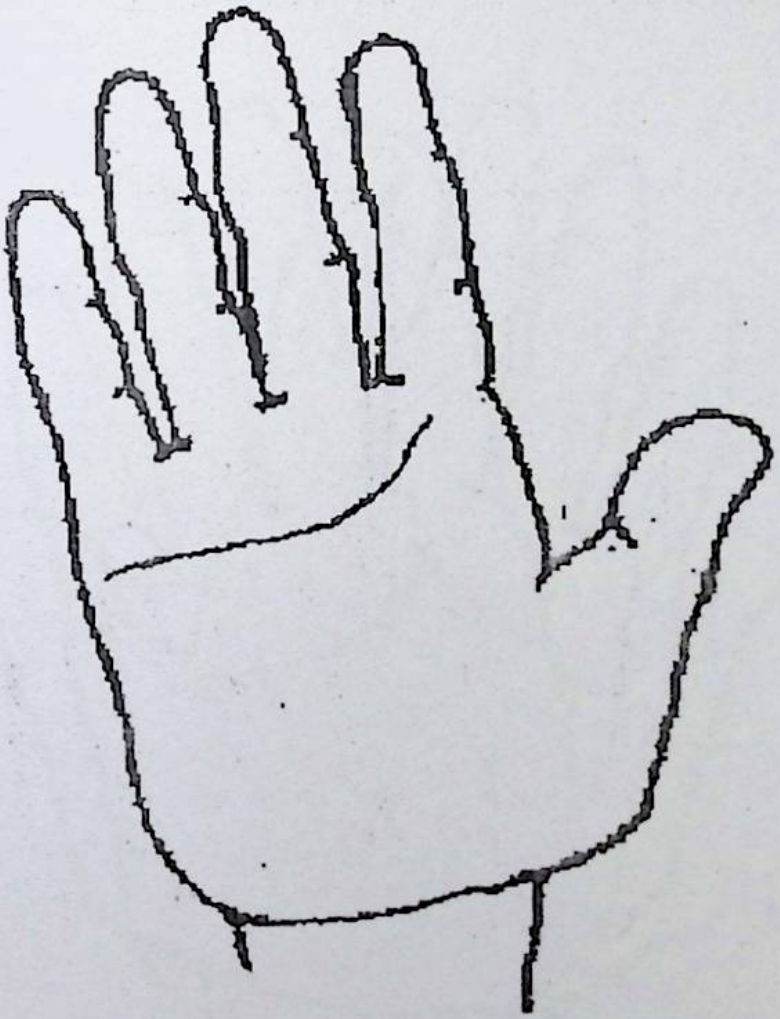

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्र व शनि पर्वत पर जाये तो एकांकी या चंचल प्रवृत्ति को दर्शाती है।

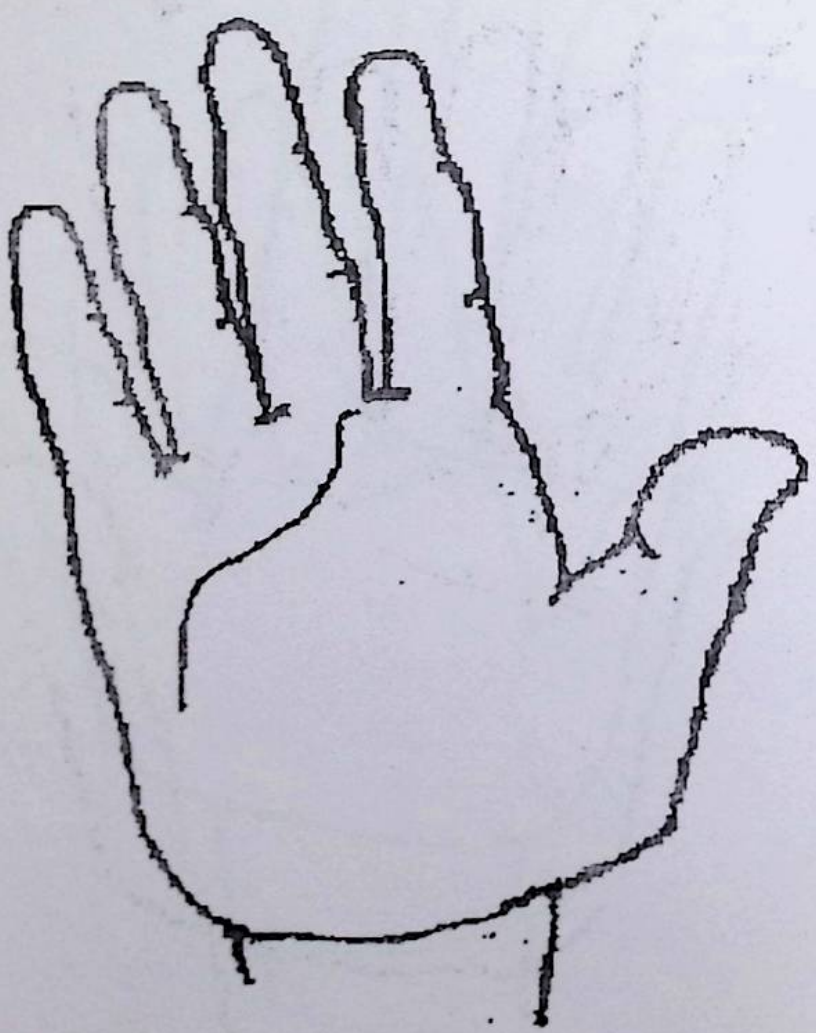

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृदय रेखा को काटने वाली छोटी–छोटी रेखाएं स्नेह, प्रेम संबंधों में बाधाएं एवं चिन्ता उत्पन्न करते हुए स्वास्थ्य को कमजोर करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्ध्व रेखाओं के काटने पर शुभ फल ही प्राप्त होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. सूर्य रेखा

चंद्र क्षेत्र या जीवन रेखा से अनामिका अंगुली के नीचे सिरे तक जो रेखा पहुंचती है वह सूर्य रेखा कहलाती है। चुंकि यह क्षेत्र सूर्य पर्वत कहलाता है अतः इस पर पाई जाने वाली उर्ध्व रेखा सूर्य रेखा कहलाती है। कई हाथों में यह नही पाई जाती व कई हाथों में भाग्य रेखा की सहायक रेखा के रूप में मौजूद रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगर भाग्य रेखा टूटी हो व सूर्य रेखा उससे मिलती हो तो भाग्य रेखा के दोषों को कम कर सूर्य रेखा प्रधानता लाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वतंत्र सूर्य रेखा का महत्व अधिक है। यह रेखा पराक्रम एवं उत्साह को बढ़ाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस हाथ में सूर्य रेखा व भाग्य रेखा दोनों ही स्पष्ट व सुंदर हो तो ऐसे जातक समाज में उच्च स्थान पर पहुंचकर वैभवशाली व सुखी जीवन का स्वामी होता है क्योंकि उसे भाग्य वृद्धि व प्रतिष्ठा दोनों ही एक साथ प्राप्त हो जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अलग–अलग स्थान में निकलकर सूर्य पर्वत तक पहुंचने वाली सूर्य रेखा का प्रभाव जिस स्थल से उदय होती है उस स्थल की विशेषताओं को इंगित करती है तथा इसका प्रभाव भी अलग–अलग होता है। सूर्य रेखाओं ओर सहायक रेखाओं को पूर्ण फल अधेड़ अवस्था में ही प्राप्त होता है। सूर्य पर्वत के साथ आक्रमक मंगल भी विकसित होने पर जातक साहसी तथा निड़र होता है। प्रायः पुलिस, सेना, खेल में वह यश प्राप्त करता है।

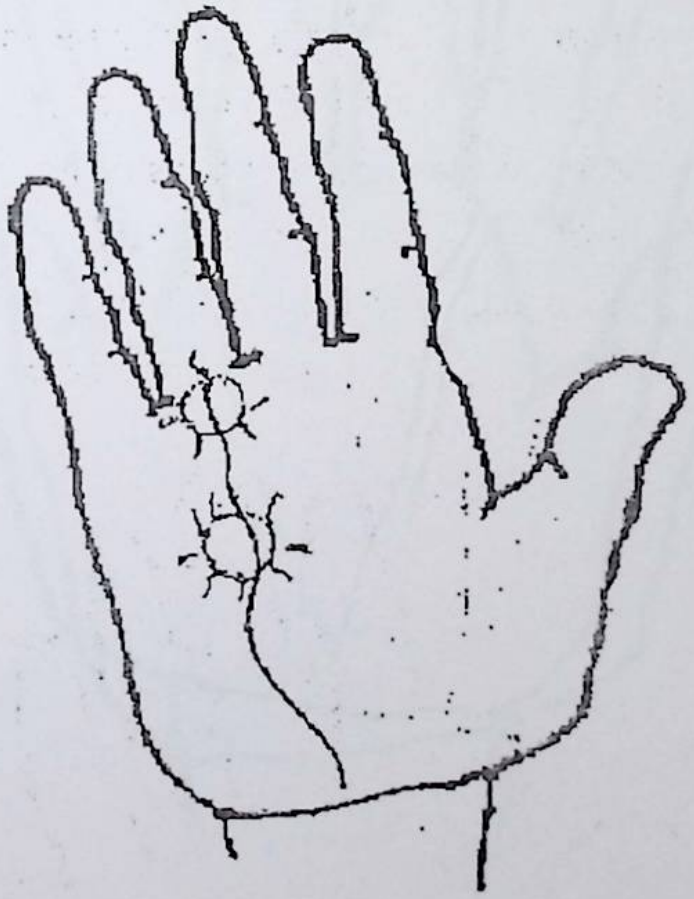

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोहरी सूर्य रेखा व्यक्ति को बहूमुखी प्रतिभा का धनी बनाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि सूर्य रेखा टूटी-फूटी हो तो पूर्ण सफलता कभी प्राप्त नही होती। सूर्य रेखा के न होने पर यश, कीर्ति प्रयत्न करने के बाद भी जातक को प्राप्त नही होते।

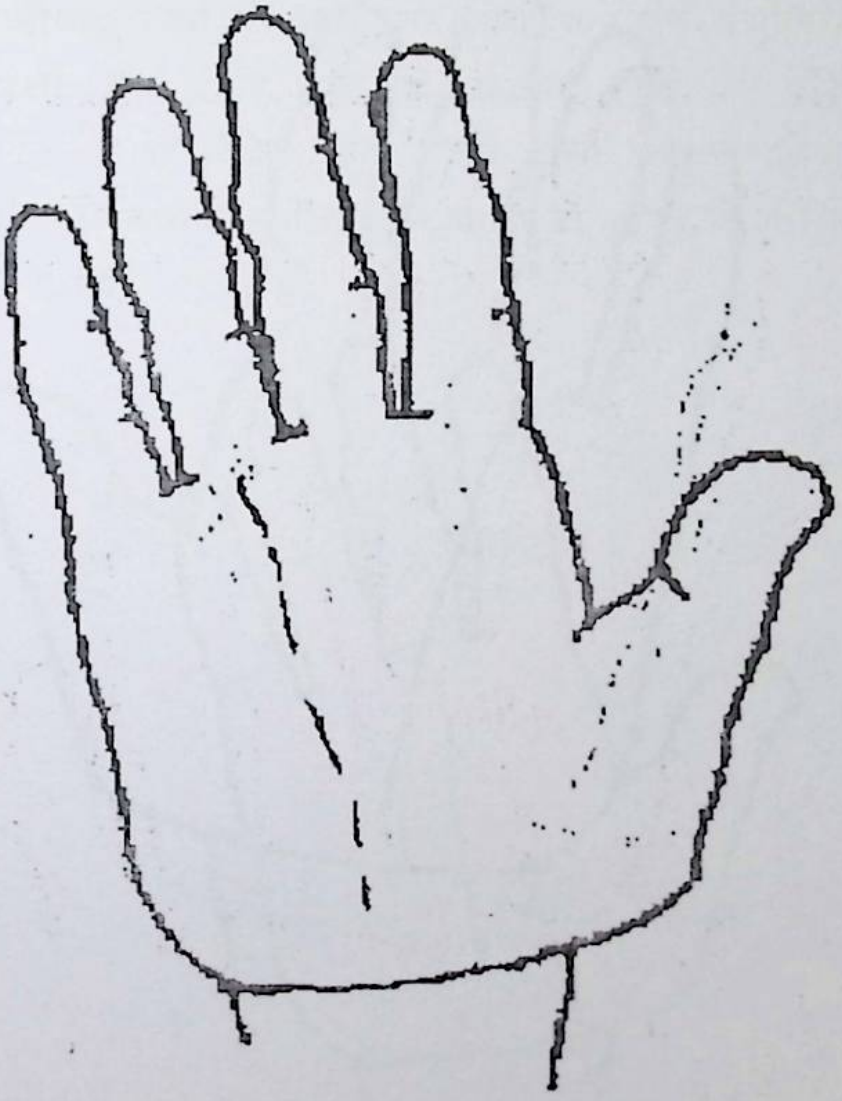

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य रेखा पर शुभ चिन्ह प्रसिद्धि में चार चांद लगा देते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. भाग्य रेखा

भाग्य रेखा मणिबंध या उससे ऊपर हथेली के तल से प्रारंभ हो चंद्र क्षेत्र से होते हुये मंगल के मैदान को पार करती हुई मध्यमा के तीसरे पर्व तक पहुंचती है। यह क्षेत्र शनि पर्वत का क्षेत्र है इसलिये इसे शनि रेखा भी कहा गया है। यह जीवन रेखा से सट कर उर्ध्व रूप में अंगुलियों की तरफ बढ़ती है। शनि ग्रह के प्रभाव होने से परिश्रमी, लगनशीलता तथा विवेक इन तीनों गुणों का समावेश उस जातक को भाग्यवान बनाता है। बहुत से हाथों में शनि रेखा नहीं पाई जाती

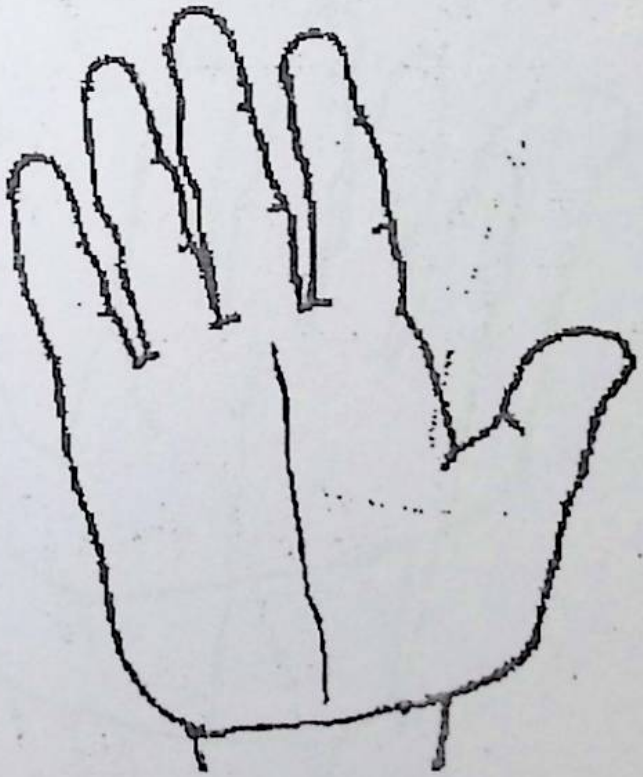

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसका यह अर्थ नहीं है कि उनका भाग्य उदय नहो होगा। दरअसल कई जातक इसके अभाव में रहकर सर्वोच्च स्थान तक पहुँचे है वे अपने परिश्रम से धीरे–धीरे उन्नति प्राप्त करते है अर्थात कोई बाहरी भौतिक कारण उन्नति में सहायक नही होता सर्वोच्च स्थान को सहज रूप से प्राप्त होना भाग्य है जो कि इस जातक का भाग्य रेखा में सहज है।

मणिबंध से उदय होकर शनि पर्वत तक पहूँचने वाली भाग्य रेखा वाला जातक बचपन से ही कर्मठ प्रवृत्ति का व कुटुंब का बोझ सहने वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्र स्थल से उदित भाग्य रेखा वाला जातक स्त्री के द्वारा अपने लक्ष्य तक पहुंचता है। जीवन रेखा से प्रारंभ होने पर उसे उद्योग में सफलता प्राप्त होती है।

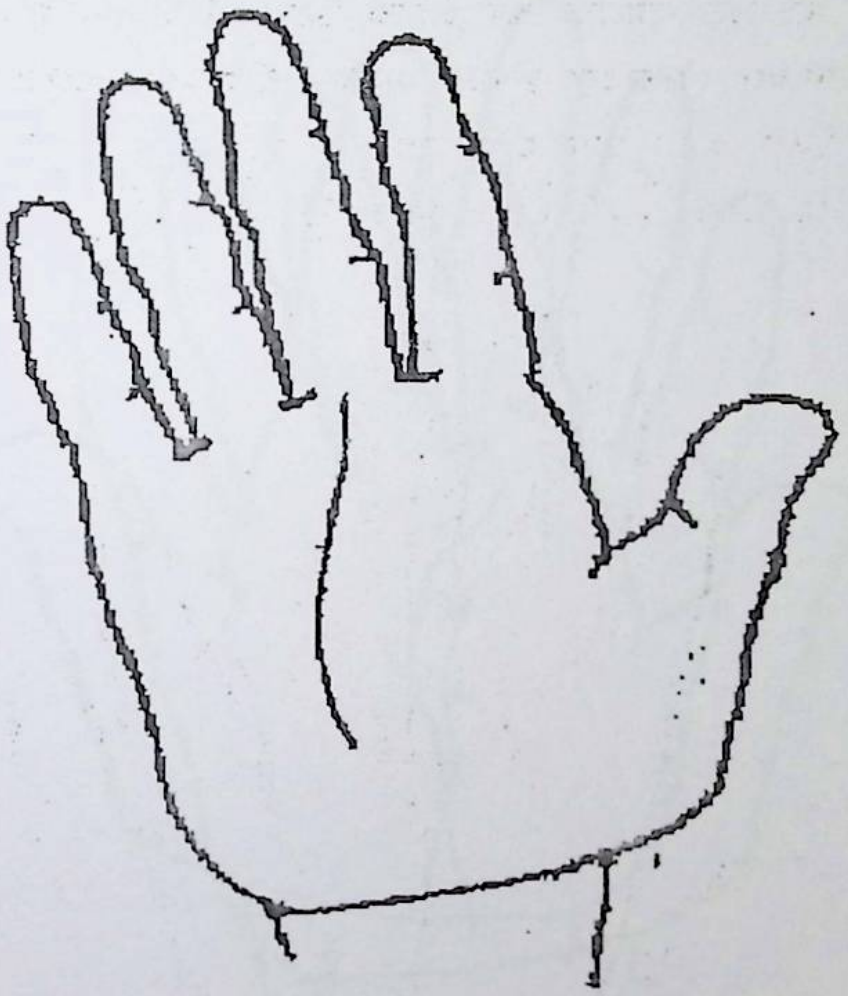

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग्य रेखा को छोटी–छोटी रेखाएं काटे तो यह भाग्य में रूकावट का लक्षण है भाग्य रेखा पर अशुभ चिन्ह हानि और रूकावट पैदा करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग्य रेखा का समापन सामान्यतः शनि पर्वत पर है। कई स्थिति में भाग्य रेखा गुरू पर्वत तक पहूंचती है जिसके फलस्वरूप जातक काफी महत्वाकांक्षी होता है तथा सफलता प्राप्त करता है। प्रायः सफल राजनीतिज्ञ लोगों के हाथ में यह देखने को मिलता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि भाग्य रेखा सूर्य रेखा पर पहूँचे तो जातक पराक्रमी होता है व यश प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध क्षेत्र पर भाग्य रेखा के पहुँचने से जातक व्यापार में सफल होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. स्वास्थ्य रेखा

कनिष्टिका के मूल से निकलकर चंद्र स्थल पर होती हुई हथेली के मध्य भाग से होती हुई मणिबंध की ओर पहुंचने वाली रेखा स्वास्थ्य रेखा कहलाती है। इसे बुध रेखा भी कहा जाता है क्योंकि यह बुध क्षेत्र से निकलकर नीचे पहुंचती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छे स्वास्थ के लिये जीवन में प्रसिद्धि, व्यापार में लाभ, भाग्योदय, मित्रों द्वारा सहयोग सभी कारकों का अनुकूल होना इस रेखा द्वारा प्राप्त होता है। मन एवं बुद्धि का संयोग एक सुदृढ़ शारीरिक, मानसिकता प्रदान करता है। यह स्वास्थ्य रेखा के रूप में प्रकट होता है।

यदि यह रेखा लंबी एवं सुंदर हो तो जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

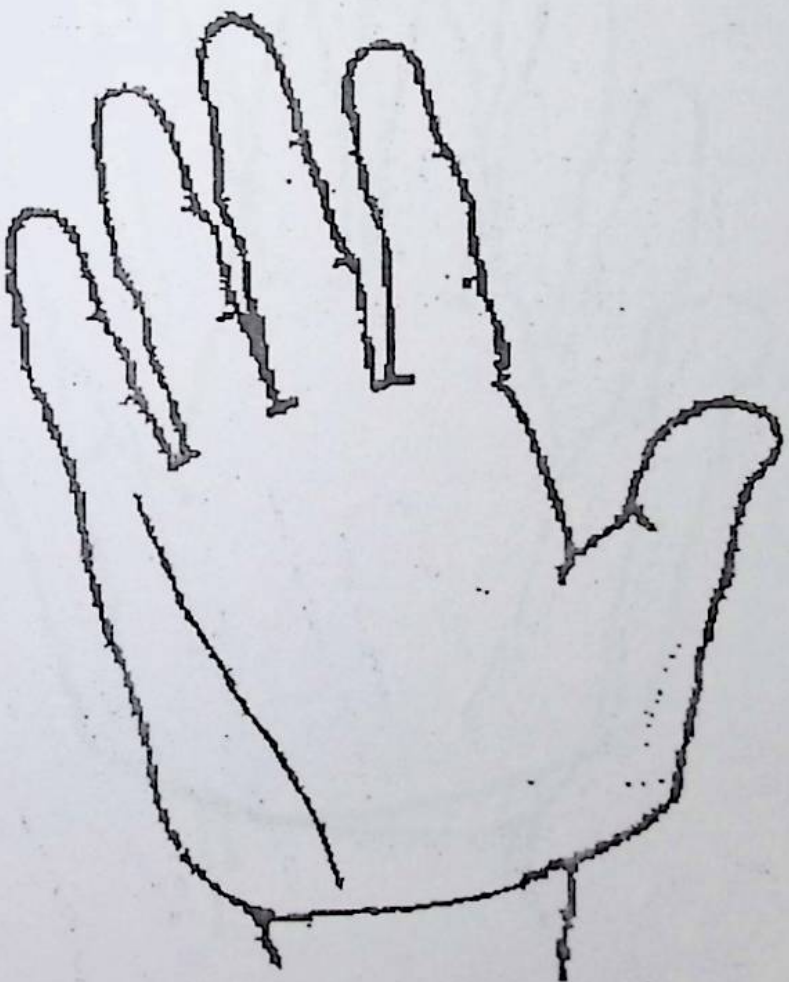

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु इसके खंड़ित या दोषयुक्त होने पर जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है। जिन जातकों में यह रेखा नही होती उनको स्नायू जनित रोग रहते है तथा धैर्य की कमी उनमें रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि स्वास्थ्य रेखा पतली हो तो जातक को पेट संबंधी व्याधियां हो सकती है। स्वास्थ्य रेखा पर अशुभ चिन्ह रोग का लक्षण है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वास्थ्य रेखा बुध स्थल पर शाखा मुक्त होने पर शुभ लक्षण है। इसके प्रभाव से जातक व्यापार में काफी सफलता प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगर बुध रेखा स्पष्ट और गहरी हो तथा साथ प्रभावी रेखाओं का मेल हो तो शुभ फल कारक है। दोष या आड़ी रेखाएं होने पर स्वास्थ्य में विपरित का सूचक है। अगर स्वास्थ रेखा नही हो तो यह भी एक शुभ लक्षण है।

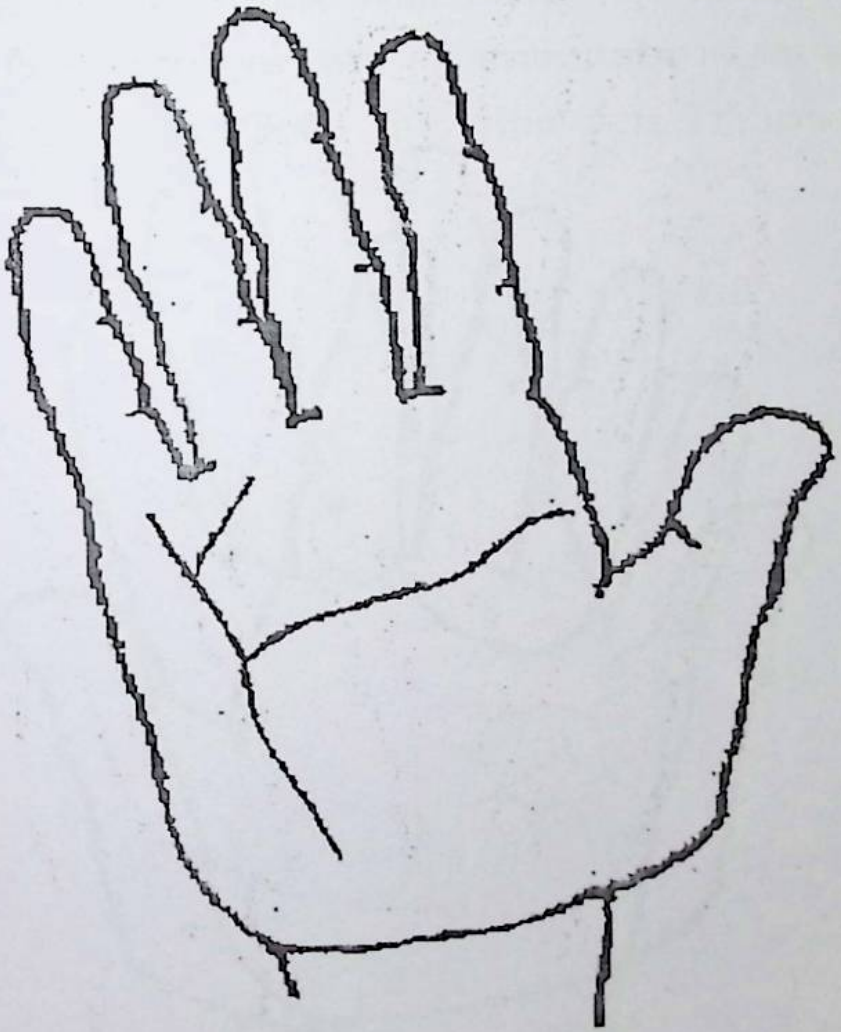

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. शुक्र मुद्रिका

यह रेखा कनिष्ठिका तथा अनामिका के मध्य धनुषाकार में मध्यमा व तर्जनी के मध्य भाग में पहुंचाती है तथा एक वलय बनाती है इसका नाम शुक्र मुद्रिका इसके भाव के कारण पड़ा है। इसका संबंध शुक्र क्षेत्र से बिल्कुल नहीं है परन्तु शुक्र के मूल कारक काम भाव के कारण इसे शुक्र मुद्रिका का नाम दिया गया है। प्रायः बहुत कम हाथों में इसे पाया गया है। अन्य पर्वत क्षेत्रों की स्थिति पर इसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फलित का प्रभाव पड़ता है। आक्रमक मंगल के विकसित होने पर जातक शीघ्र आवेश में आने वाला व काम भाव में क्रूरता रखता है।

टूटी–फूटी शुक्र मुद्रिका का प्रभाव अधिक नहीं रहता परन्तु अन्य ग्रह स्थलों के विकसित या अविकसित होने पर इसका प्रभाव अलग–अलग होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौण रेखाएं

1. मंगल रेखा

शुक्र पर्वत पर जीवन रेखा से सटकर अनेक रेखाएं पाई जाती है। इनमें जीवन रेखा से सटी हुई रेखा को मंगल रेखा कहते है। इसका उदय आक्रमक मंगल क्षेत्र से होता है और शुक्र पर्वत को घेर यह आगे बढ़ती है। इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। यह जितनी सुदृढ़ होगी जातक उतना स्वस्थ होगा। साथ ही जीवन रेखा के दोषों का निवारण भी होगा।

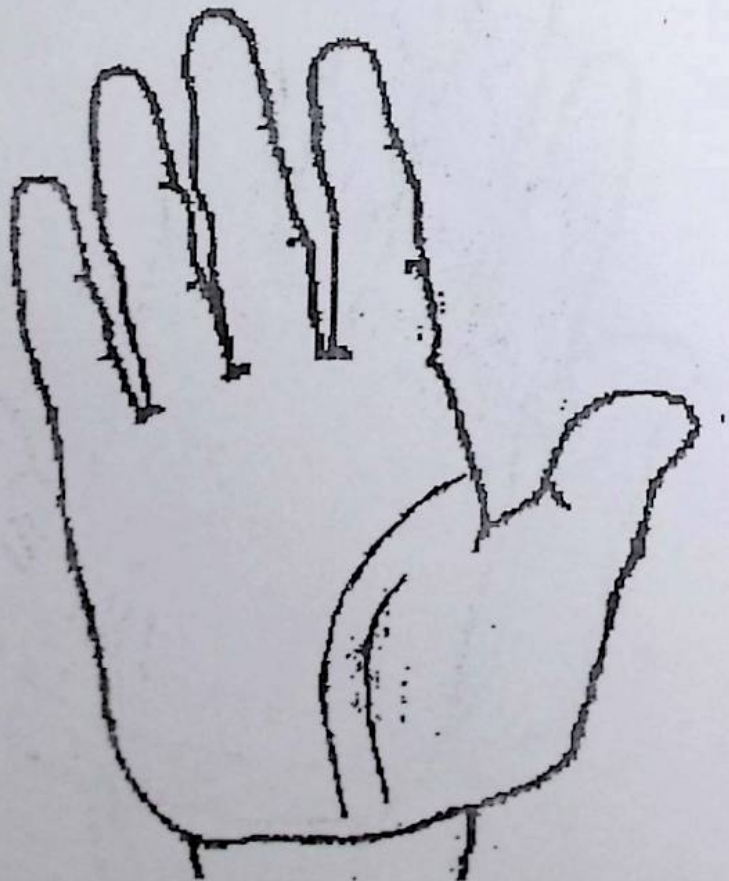

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह रोगों से जातक की प्रतिरक्षा करती है। इसके कमजोर होने का अर्थ जातक के स्वास्थ में निर्बलता होगी। मंगल रेखा के समानान्तर रेखाएं सहायक रेखाएं है अर्थात् माता–पिता या अन्य सहयोगी की संख्याएं है।

2. मित्र रेखाएं

शुक्र पर्वत की सहयोगी रेखाएं जातक के सहयोगी व मित्रता का भाव बताती है। अंगुलियों व अंगूठें के पोरों पर खड़ी रेखाएं मित्रता एवं सहयोगी व्यक्ति की संख्या बताती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. शत्रु रेखाएं

मित्र रेखाओं के ठीक विपरित रेखाओं को व मंगल रेखाओं को काटने वाली रेखाएं शत्रु या हानि करने वाले की संख्या बताती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. वासना रेखाएं

मणिबंध से बुध क्षेत्र तक जाने वाली यह रेखा वासना की अधिकता बताती है। यह एक छोटी सी रेखा है। यह रेखा शुभ नहीं मानी जाती। यह बहुत कम हाथों में पाई जाती है।

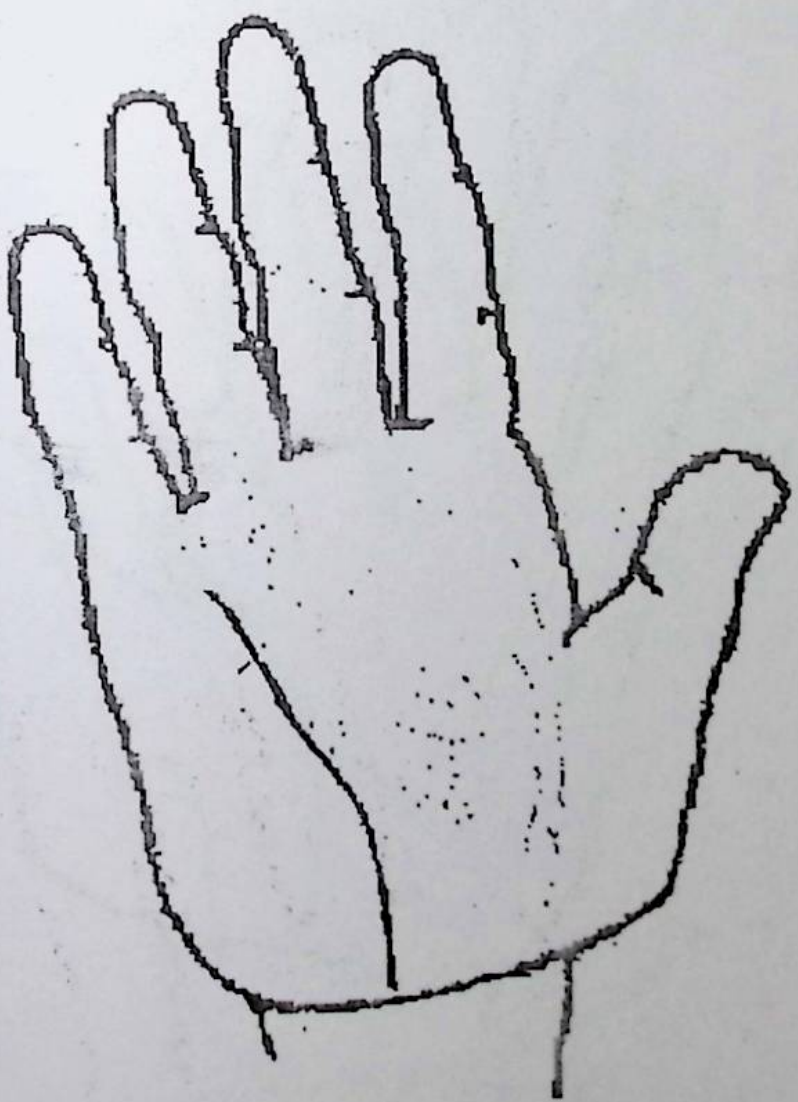

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि यह रेखा जीवन रेखा को काट कर शुक्र क्षेत्र में पहुंच जाये तो जातक अत्यधिक कामुकता या मद्यपान के कारण अपना जीवन नष्ट कर लेता है।

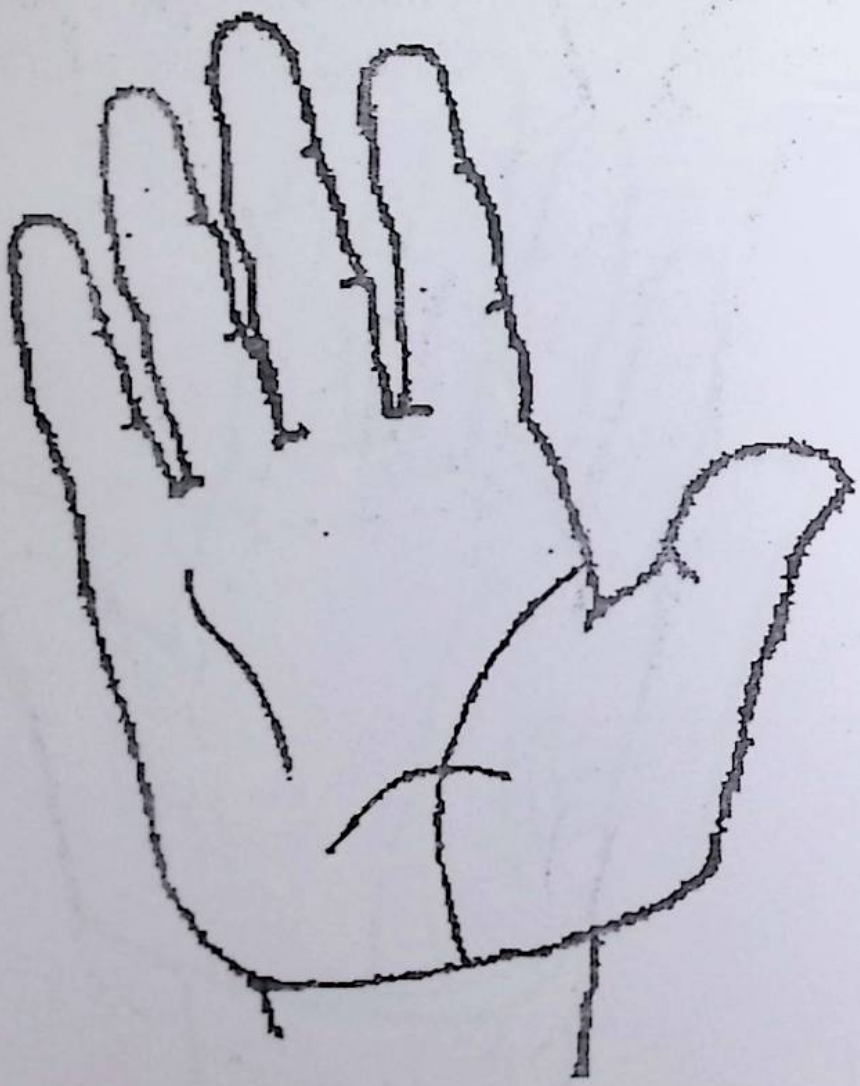

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. अतीन्द्रिय रेखाएं

यह रेखा भी बहुत कम हाथों में देखने को मिलती है। यह दार्शनिक हाथों में देखने को मिलती है। यह रेखा स्वास्थ्य रेखा के आसपास बुध व चंद्र क्षेत्रों के बीच अर्धचंद्राकार रूप में होती है। ऐसे जातक काफी संवेदनशील होते है तथा परलौकिक शक्तियाँ प्राप्त करते है जिनके द्वारा ये होने वाली घटनाओं को पहले से जान सकते है।

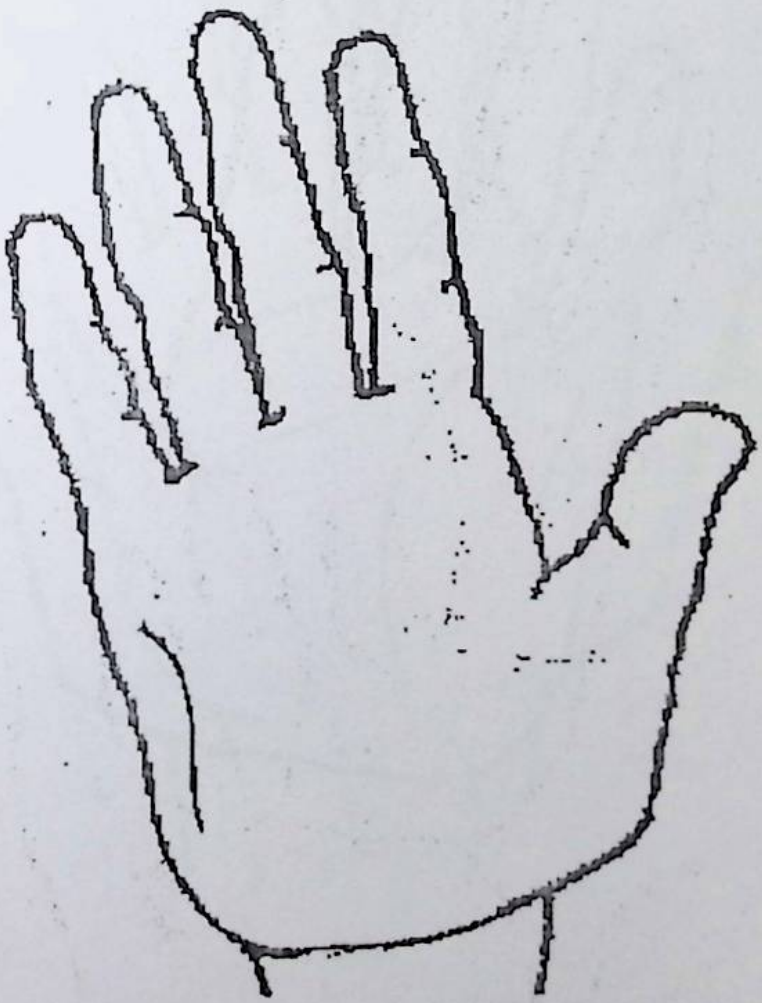

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह चंद्र क्षेत्र के जितनी ऊपरी स्तर से आरंभ हो उतनी प्रभावशील रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगर यह हृदय रेखा के नीचे समाप्त हो तो जातक में तीव्र सम्मोहन शक्ति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि इस रेखा के साथ क्रॉस हो एवं गुरू मुद्रिका की ओर हो तो जातक किसी सिद्ध पुरूष व ईश्वर से साक्षात्कार करने वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. विवाह रेखाएं

बुध क्षेत्र पर करतल की तरफ से आनेवाली आड़ी रेखाएं विवाह रेखा कहलाती है। इनकी संख्या एक या दो से अधिक भी हो सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु केवल लंबी रेखा ही विवाह रेखा होती है। अन्य छोटी रेखाएं प्रेम आकर्षण या लैंगिक ही प्रकट करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि यह रेखा हृदय रेखा के निकट हो तो जातक का कम उम्र में विवाह होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि बुध क्षेत्र के मध्य हो तो सही उम्र में विवाह होता है। अधिक ऊपर हो तो देर से विवाह होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाह रेखा से कोई रेखा चंद्र क्षेत्र से आकर मिल जावे तो विवाह उपरांत धन प्राप्ति के योग बनते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाह रेखा पर अशुभ चिन्ह नुकसान व हानि पहुंचाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाह रेखा यदि उपर की ओर मुड़ जाती है तो जातक अविवाहित रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि विवाह रेखा द्वि शाखा होकर मध्य तक पहुँच जावे तो जीवन साथी से अलग होने व तलाक की स्थिति निर्मित करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि सूर्य रेखा से मिल जाये तो जातक का विवाह विशिष्ट व्यक्ति से होता है।

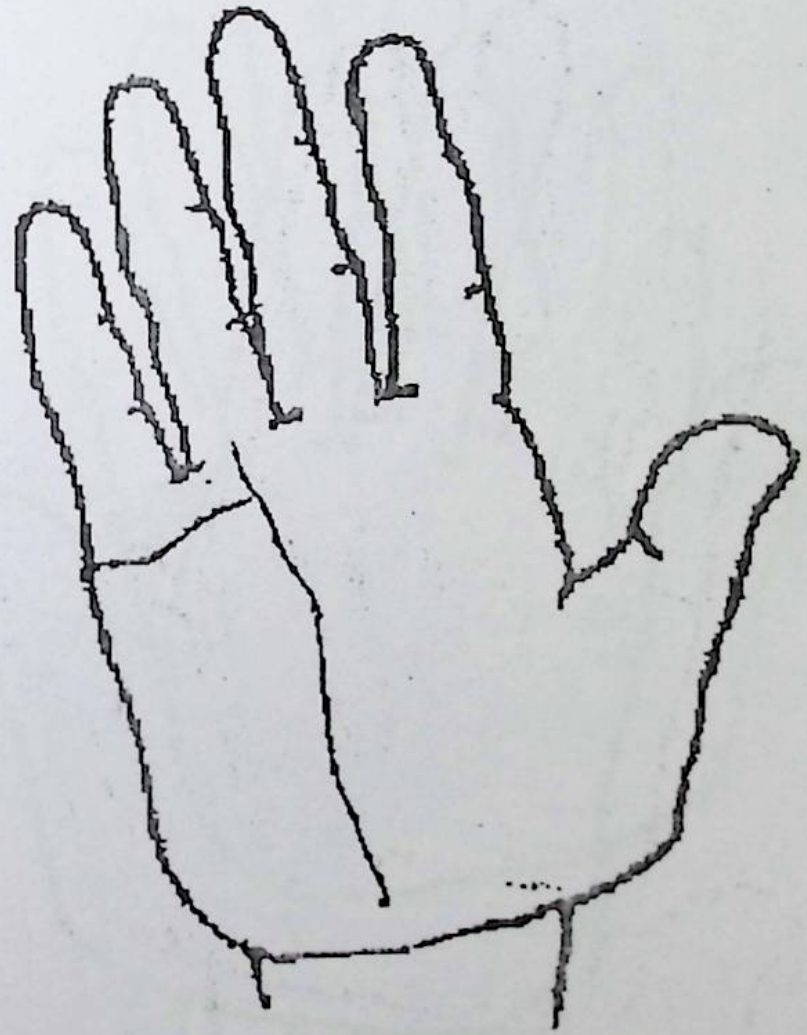

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्य रेखाएं

7. संतान रेखाएं / पुत्र रेखा

विवाह रेखाओं के ठिक उपर उर्ध्व रेखाएं संतान रेखाएँ होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पतली व सीधी रेखा पुत्र को दर्शाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झुकी हुई रेखा पुत्री होना इंगित करती है। ये रेखाएं इतनी सूक्ष्म रूप में होती है कि इन्हें आंवर्धन कांच के माध्यम से ही हाथ को देखा जा सकता है। कुछ हस्त शास्त्रियों द्वारा स्थान शुक्र क्षेत्र व अंगूठे के मूल में भी दर्शाया गया है

क्योंकि शुक्र स्थल काम भाव का जनक है। अतः इसके अविकसित होने पर संतान उत्पत्ति में बाधाएँ उत्पन्न हो सकती है। संतान रेखा देखने के लिये जातक व उसकी पत्नि दोनों का हाथ देखना जरूरी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. यात्रा रेखाएँ

चंद्र क्षेत्र अपनी चंचलता तथा बैचेनी का मूल गुण लिये रहता है। अतः इस स्थल पर हथेली के छोर पर खड़ी रेखाएं या चंद्र क्षेत्र के मध्य में करतल छोर पर आड़ी रेखाएं, जीवन रेखा से चंद्र क्षेत्र पर जाने वाली सहायक रेखाएं यात्रा रेखाएं कहलाती है। क्योंकि वैचारिक परिवर्तन का कारक, व्यवसाय या मनोरंजन भी हो सकता है।

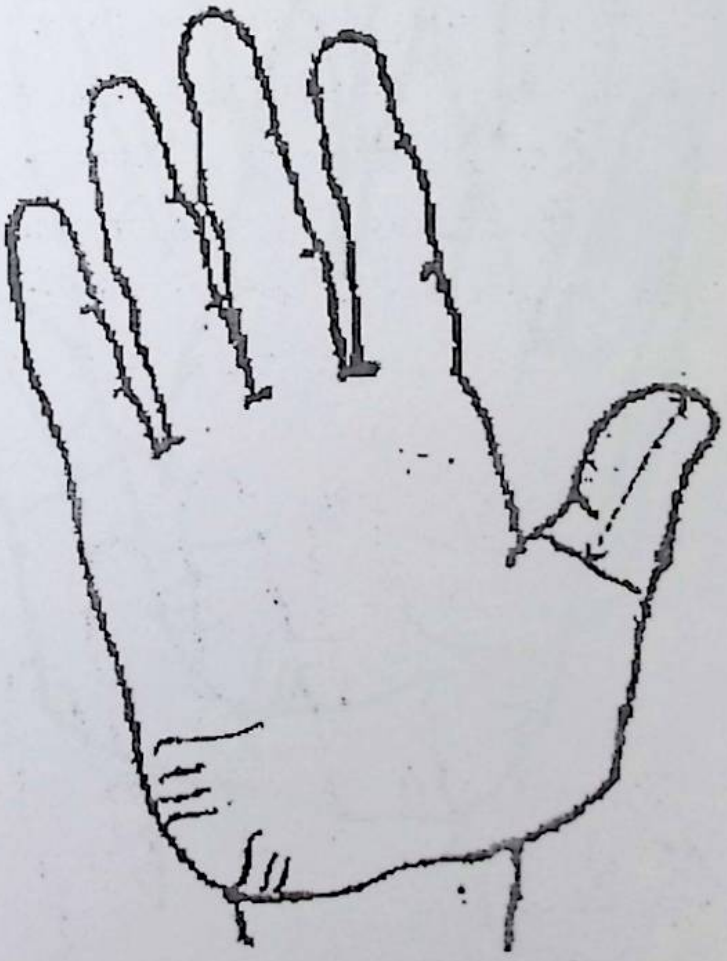

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतः यात्रा रेखा रेखाएं होने पर यात्रा पूर्ण होती है। हथेली की बनावट पर भी इसका निर्भर होता है। सख्त हाथों में यात्रा रेखाएं होने के बावजूद यात्राएं पूर्ण नहीं हो पाती। मुलायम हाथों में केवल बैचेनी बन कर रह जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु अंगूठे के पहले पर्व के बड़े होने पर यात्राओं का पूर्ण होना निश्चित हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्रा रेखाओं पर क्रास, द्विप जैसे चिन्ह हानिकारक है। ये यात्राएं धन हानि कराती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. मणिबंध रेखाएं

हथेली की कलाई पर जोड़ के स्थान पर कुछ आड़ी रेखाएं पाई जाती है, इन्हें मणिबंध रेखाएं कहते है। ये प्रायः तीन की संख्या में पाई जाती है। बहुत कम हाथों में चौथी रेखा भी पाई जाती है। इनका क्रम कलाई के बाजू की ओर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहता है। इनके द्वारा जातक की उम्र, समृद्धि, यात्राओं व स्वास्थ्य के बारे में जाना जाता है।

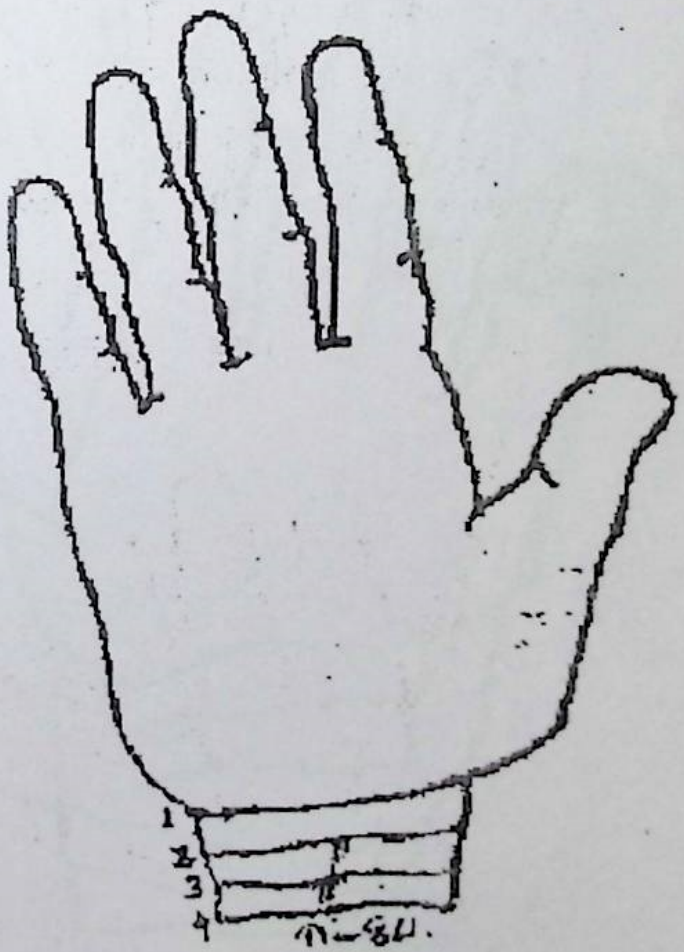

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिन कलाईयों में तीन रेखाएं स्पष्ट बिना खंड़ित रूप में मौजूद हो वह जातक बुद्धिमान होता है एवं वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है। मणिबंध रेखा द्वारा आयु निर्धारण भी किया जा सकता है। एक रेखा की आयु, 30 वर्ष की सूचक है अर्थात तीन स्पष्ट रेखाएं जातक की 90 वर्ष की आयु इंगित करती है परन्तु अस्पष्ट और टूटी रेखाएं जातक के स्वास्थ्य व कम आयु को इंगित करती है।

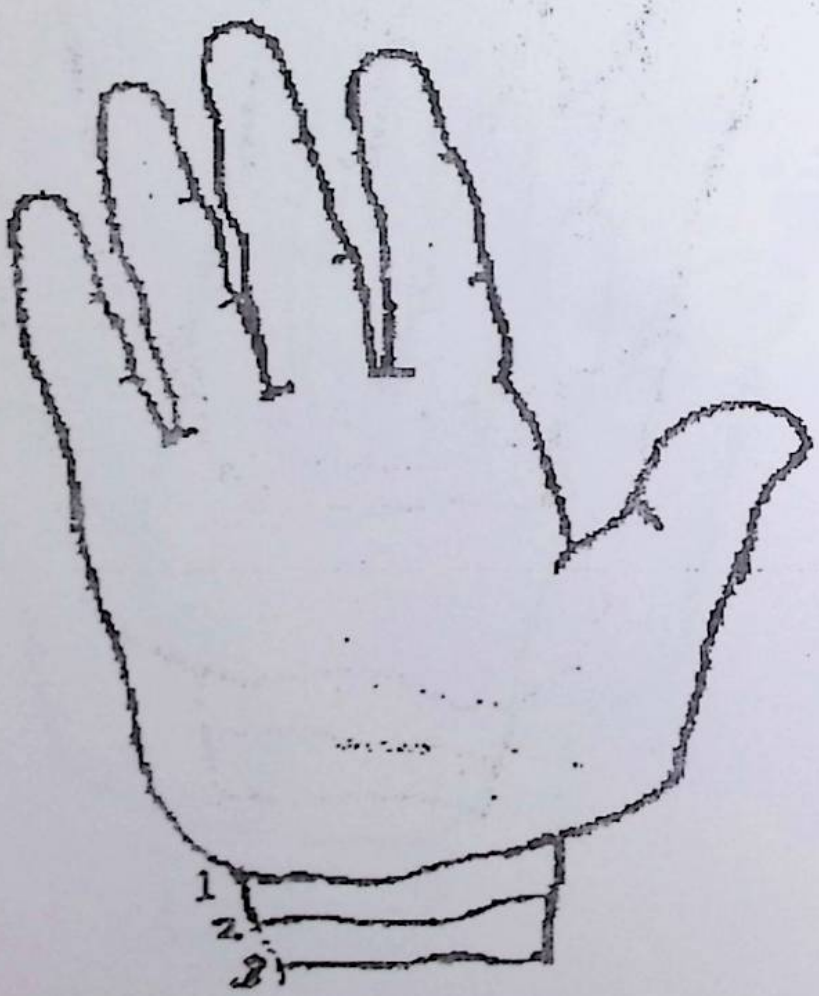

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि प्रथम मणिबंध रेखा धनुषाकार आकृति लिये हो तो संतान उत्पत्ति में बाधा उत्पन्न होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार क्रास या बिन्दु होने पर जातक का जीवन संघर्ष पूर्ण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. शनि मुद्रिका

मध्यम अंगुली के आधार में शनि पर्वत के नीचे एक धनुषाकार वलय के रूप में स्थित रेखा शनि वलह कहलाता है। यह पूर्ण या अर्ध वलय के रूप में भी पाई जाती है। शनि क्षेत्र पर होने से इस क्षेत्र के विशेष गुण व अवगुण प्रभावी होते है। पूर्ण मुद्रिका वाले जातक परिवर्तनशील विचारधारा वाले होते है। इनमें बैचेनी सदैव विद्यमान रहती है। वे किसी भी कार्य को पूर्ण मन से नहीं कर पाते। अतः इच्छित परिणामों तक न पहुँचकर सफल नहीं होते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि मुद्रिका प्रायः अशुभ परिणाम ही प्रदान करती है। प्रायः अपराधिक, असफल व हताश व्यक्तियों में यह रेखा पाई जाती है। अर्ध वलय कम अशुभता लिये रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रास अथवा बिन्दु इस रेखा के साथ दुर्भाग्य सूचक है।

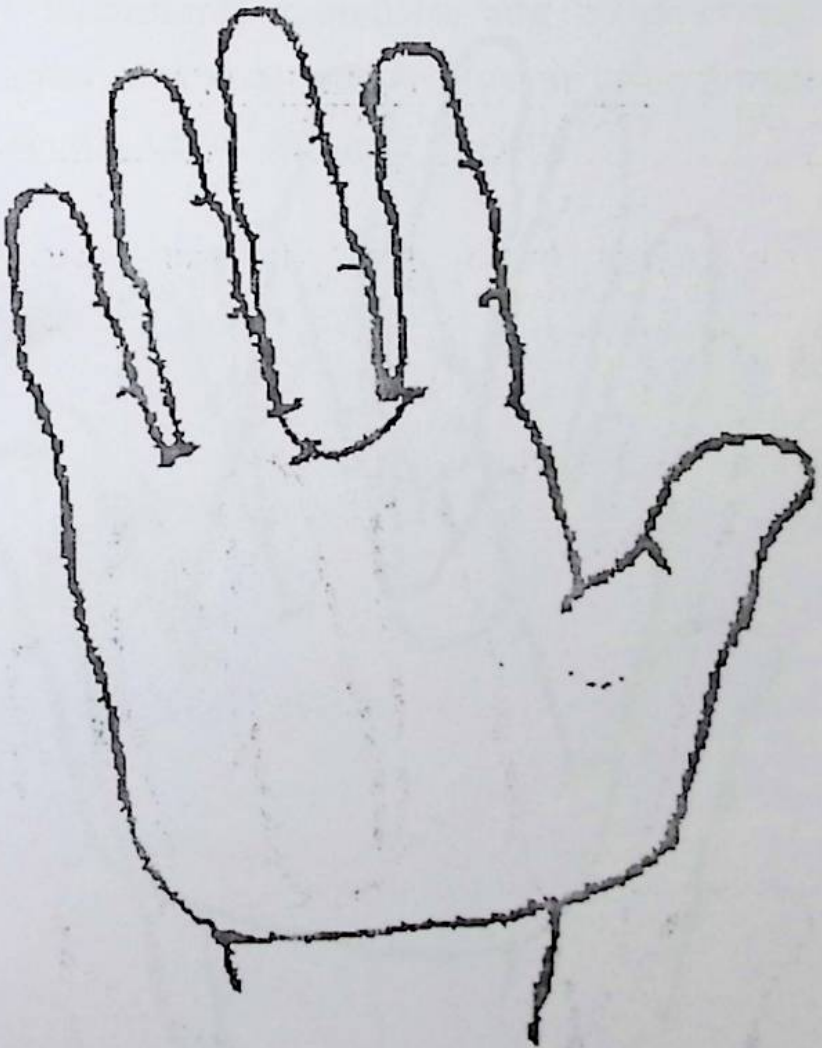

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु शनि रेखाएं या उर्ध्व रेखाएं इस को काटे तो शुभ कारक है तथा अशुभ फलों में कमी आती है।

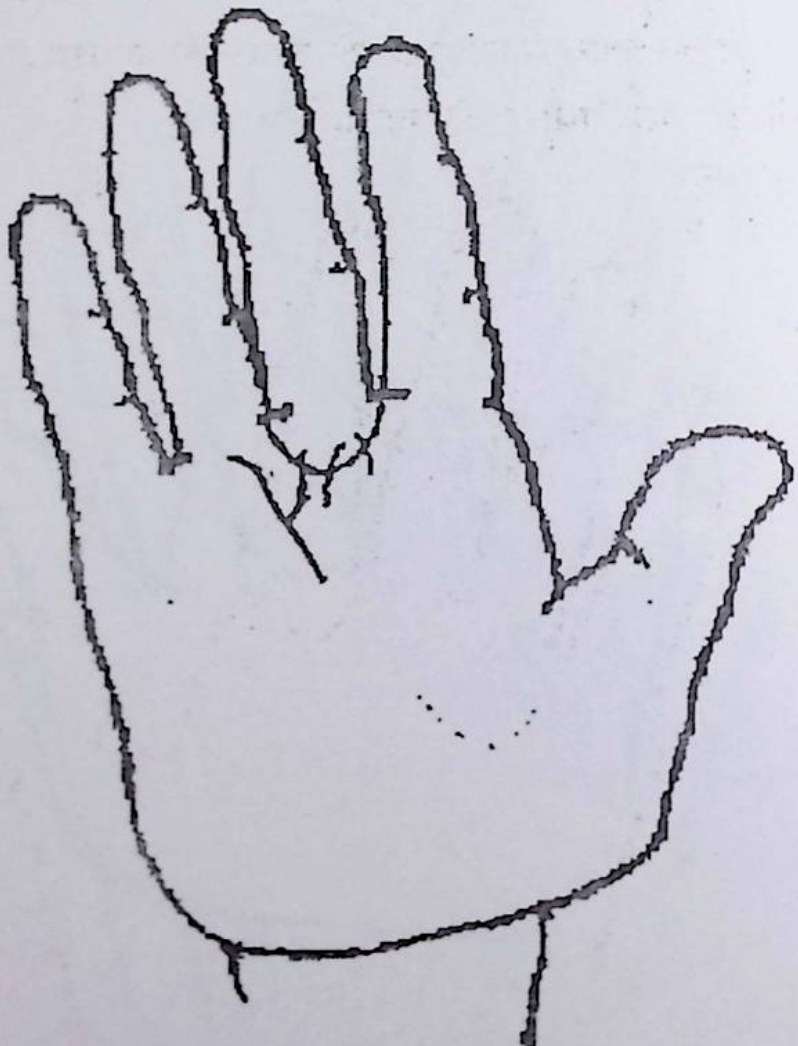

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. गुरू मुद्रिका

तर्जनी अंगुली के नीचे गुरू क्षेत्र में एक अर्धचंद्राकार लिये गुरू मुद्रिका बहुत कम लोगों में पाई जाती है। इस रेखा को वैराग्य रेखा भी कहते है क्योंकि इसके होने पर जातक में आध्यात्मिक व दार्शनिक भाव की मात्रा बढ़ जाती है। उसे आत्म ज्ञान कम उम्र में प्राप्त हो जाता है तथा गुप्त विद्याओं में वह प्रवीण हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टूटी हुई या अधूरी मुद्रिका जातक में दोनों प्रवृत्ति का द्योतक है जिसमें उसे अपयश प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु इसकी आंशिक उपस्थिति, अच्छे गुणों की वृद्धि व सात्विकता में बढ़ोत्तरी करती है।

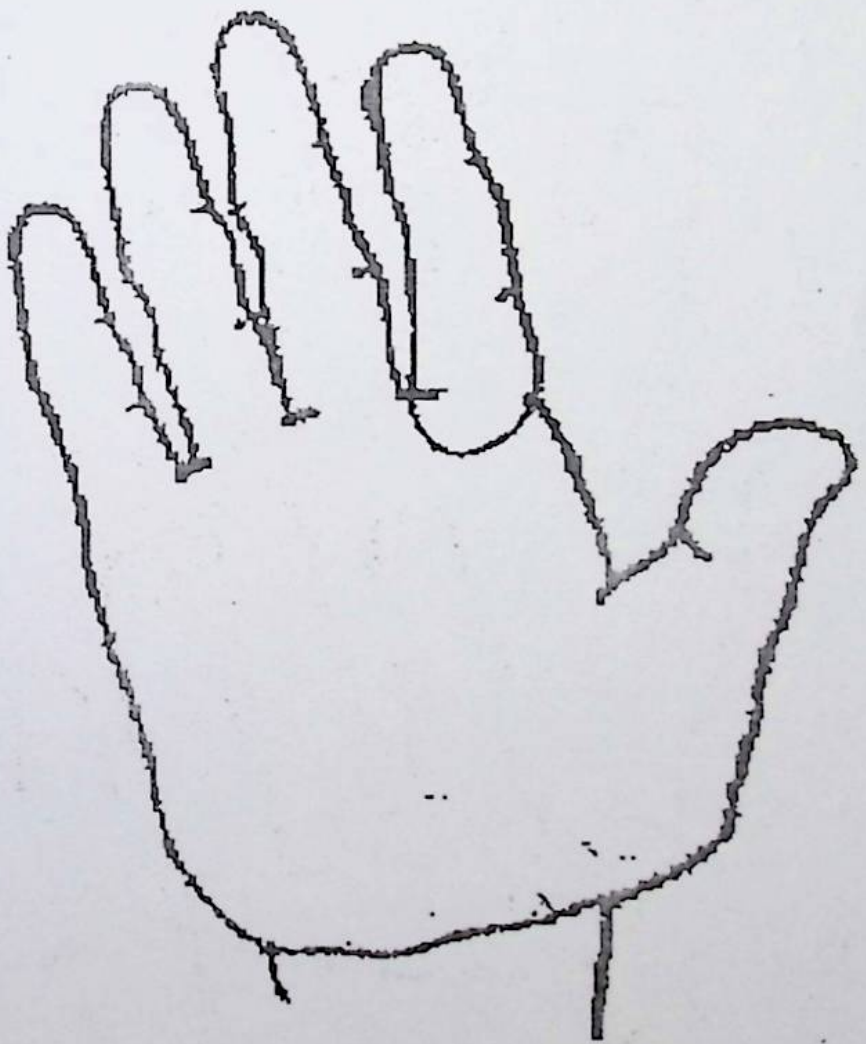

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaipole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh